श्री पार्थिवेश्वर प्रदोष पूजन पद्धति

सन्तोष शर्मा

"बनारसी महाराज"

द्वारा

श्री शिवाराधन मण्डल, बरेली
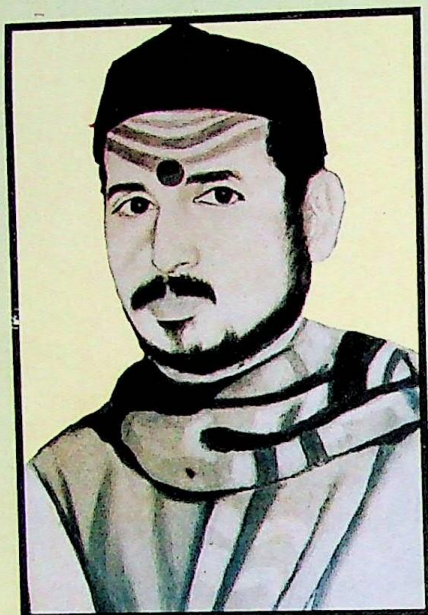
प्रातः स्मरणीय

स्व० पं० शिवकुमार शास्त्री

"अन्नी महाराज"

जन्म वैशाख कृष्ण अष्टमी

सम्वत १९८५

शिवलोक प्रयाण पौष शुक्ल त्रयोदशी

सम्वत २०३५

कर्मनिष्ठ योगी

स्व० पं० जगदीश वल्लभ जी

जन्म २-१२-१९१०

गोलोक प्रयाण ४-८-१९९७
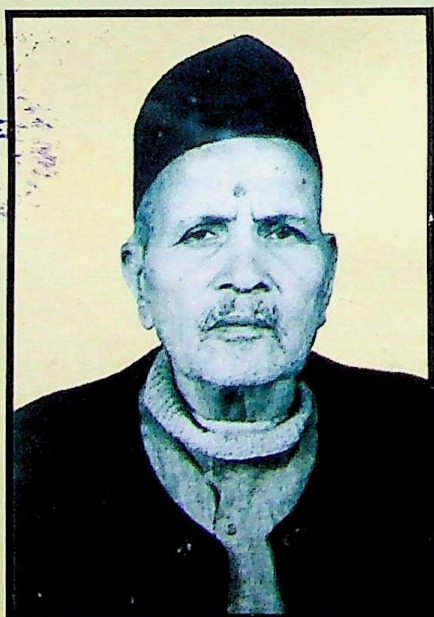
श्रीगणेशाय नमः

भवो भवतु भव्याय

श्रीपार्थिवेश्वर-प्रदोषपूजापद्धति

प्रेरणास्त्रोत

स्वर्गीय पं० शिवकुमार शर्मा "अन्नी महाराज"

संग्रहकर्ता

१. स्व. पं० जगदीशवल्लभ 'ज्योतिषी'

२. पं० सन्तोषकुमार शर्मा 'बनारसी महाराज'

विशेष सहयोगकर्ता

१. आचार्य श्रीकृष्ण पाण्डेय

२. पं० रामचन्द्र मिश्र

३. ओमप्रकाश अग्रवाल

प्रकाशक

श्रीशिवाराधन मण्डल

१६४, आलमगीरी गंज, बरेली।

दूरभाष : ५५६०८२

दो शब्द

परमात्म–तत्व सदा कल्याण रूप होने से "सदाशिव" कहा जाता है। अचिन्त्यलीलाशक्ति के द्वार से शिवतत्व स्वयं ही जगत का निमित्त और उपादानकारण सिद्ध होता है। परात्पर सच्चिदानन्द शिव एक हैं, वे विश्वातीत और विश्वमय भी हैं। वे गुणातीत और गुणमय भी हैं। वे एक ही हैं और अनेकों रूपों में भी परलक्षित होते हैं। वे जब अपने विस्तार रहित अद्वितीय स्वरूप में स्थित होते हैं तब मानों ये विविध विलासमयी असंख्य रूपों वाली विश्वरूप जादू के खेल की जननी प्रकृति देवी उनमें विलीन रहती हैं। जो शिवनामरूपी नौका पर आरूढ़ हो संसार रूपी समुद्र को पार करते हैं, उनके जन्म–मरण रूप संसार के मूलभूत सारे पाप निश्चय ही नष्ट हो जाते हैं। जो शिवनामरूपी सुधा वृष्टिजनित धारा में गोते लगा रहे हैं, वे संसार रूपी दावानल के बीच में खड़े होने पर भी कदापि शोक के भागी नहीं होते। जिन पुण्यात्माओं के मन में शिवनाम के प्रति भक्ति–श्रद्धा है, ऐसे लोगों की निश्चय ही सर्वथा मुक्ति होती है।

अति प्रशस्त सर्वाचरणीय श्रेष्ठ प्रदोष व्रत भगवान शंकर की प्रसंन्नता और विश्वकल्याण के उद्देश्य से प्रत्येक मास के कृष्ण–शुक्ल पक्ष दोनों में सांयकाल रहने वाली त्रयोदशी में किया जाता है। प्रदोष का मुहूर्त्त सूर्यास्त के पीछे प्रायः तीन घण्टे माना जाता है। जो मनुष्य प्रदोष के समय परमेश्वर शिव के चरणकमल का अनन्य मन से आश्रय लेता है उसके धन–धान्य, स्त्री, पुत्र, बन्धु–बान्धव और सुख–सम्पत्ति में अभिवृद्धि होती है। बरेली में प्रदोष–पूजन **लखनऊ निवासी स्व0 बृजलाल मित्तल** की प्रेरणा से **स्व0 पं0 अन्नीमहाराज** ने १९५२ में चैत्र कृष्ण द्वादशी को बिहारीपुर निवासी **पं0 नाथूराम पाराशरी** के घर से प्रारम्भ किया। उन्होंने धर्मसंध प्रदोष मंडल की स्थापना कर अनेकों पुस्तकों का प्रकाशन कर निःशुल्क वितरित किया। उनके मंडल द्वारा अब तक लगभग ४००० पूजनों का आयोजन किया जा चुका है।

यूँ तो अब तक भगवान शिव के प्रदोष–पूजन की अनेकों पुस्तकें बरेली के विभिन्न मंडलों द्वारा प्रकाशित की जा चुकी हैं, परन्तु **श्री शिवाराधन मंडल बरेली** द्वारा प्रकाशित पुस्तकों की श्रंखला में ये **१४ वां पुष्प** आपके समक्ष प्रस्तुत है,। निःसन्देह पूर्व पुस्तकों की अपेक्षा यह अनूठी है। इसकी सारगर्भिता एवं उपयोगिता का आंकलन तो आप पर निर्भर है। संस्कृत के पूजन को सर्वग्राह्य बनाने हेतु यथास्थान पद्य रूप में भी निरूपण किया गया है ताकि जनसामान्य भी लाभान्वित हो सके। यद्यपि इस पुस्तक के प्रकाशन में काफी सावधानी बरती गयी है तथापि यदि कोई त्रुटि रह गई हो तो क्षमा प्रदान करते हुये प्रकाशक को लिखें ताकि इस पुस्तक के आगामी अंक में उसका सुधार किया जा सके।

दिनांक 11,6,2000
रविवार श्री गंगा दशहरा

शुभाकांक्षी
ओमप्रकाश अग्रवाल

"श्री शिवाराधन मण्डल" एक परिचय

अलक्ष की बात अलक्ष जाने, समक्ष को ही हम क्यों न मानें?
रहे वही प्लावित प्रीतिधारा, आदर्श ही ईश्वर है हमारा।

भगवान् शंकर की साकार प्रदोष–पूजन की जो प्रेम की धारा अन्नी महाराज जी ने बहाई वह शनैः शनैः लोकप्रियता के शिखर पर जा पहुँची। चूँकि प्रदोष मण्डल द्वारा एक दिन में एक स्थान पर ही पूजन संभव होता था अतः अन्य धर्मप्रेमी भक्तजन उसके लाभ से वंचित रह जाते थे। श्रद्धालुओं की इस मर्मान्तक पीड़ा से व्यथित होकर स्वर्गीय पं0 श्री जगदीशवल्लभ जी की अध्यक्षता में पं0 सन्तोष शर्मा "बनारसी महाराज" द्वारा शिवाराधन मण्डल की स्थापना 29 जुलाई 88 को की गई। इस मण्डल द्वारा प्रथम प्रदोष–पूजन आशीर्वाद धर्मशाला गंगापुर बरेली में किया गया।,

मण्डल के गठन व इसके सुव्यवस्थित परिचालन में अनेकों योग्य कर्मकांडी ब्राह्मणों, पुरोहितों व संगीतज्ञों का अपूर्व योगदान प्राप्त हुआ। गम्भीर विचार–विमर्श के पश्चात यह अनुभव किया गया कि बरेली के अन्य सभी प्रदोष मण्डल भगवान् शिव का अभिषेक रूद्री के मात्र सोलह मन्त्रों से कराते हैं। अभिषेक ही भगवान् शंकर को सर्वाधिक प्रिय है अतः श्री शिवाराधन मण्डल के प्रत्येक प्रदोष–पूजन में शत रूद्री से अभिषेक अनिवार्य किया गया। शिवाराधन मण्डल के गठन से पूर्व प्रदोष–पूजन में भगवान् के कीर्तन–भजन का संगीत पक्ष व भगवान् का मनमोहक श्रंगार गौण वस्तु था। पं0 बनारसी महाराज व ओमप्रकाश अग्रवाल के अथक प्रयासों से अनेकानेक लब्ध प्रतिष्ठित संगीतज्ञ मण्डल से जुड़े व उन्होंने अपनी रचनायें भगवान् के चरणों में सादर समर्पित की, इसका प्रभाव यह हुआ कि अन्य सभी मण्डलों को भी मजबूरी में संगीत पक्ष की ओर अपना ध्यान आकृष्ट करना पड़ा। भगवान का अद्वितीय मोहक श्रृंगार इस मण्डल की विशिष्ट पहिचान रही है। काशी–वृन्दावन व अनेकानेक अन्य स्थानों से नई से नई श्रृंगार सामग्री मंगाकर प्रत्येक पूजन में भगवान शिव का लुभावना श्रृंगार किया जाता हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि भगवान् शंकर स्वयं अवतरित होकर अपने भक्तों को दर्शन दे रहे हैं। भक्तजन अनायास ही आत्मविभोर हो उठते हैं।

वैसे तो जिन लोगों ने इस मण्डल की सराहनीय सेवा की उसकी सूची बहुत लम्बी है तथापि उनमें प्रमुख रूप से सर्वश्री स्वर्गीय पं0 जगदीश वल्लभ जी, पं0 श्री कृष्ण जी, भुवन चन्द्र पंडा, पं0 नत्थू लाल, पं0 सुभाष, पं0 प्रदीप कौशिक, पं0 राजेन्द्र शर्मा, पं0 रामचन्द्र मिश्र, पं0 नीलाम्बर नन्दन पं0 मुकेश शर्मा, पं0 सचेन्द्र शर्मा, पं0 अतुल शंखधार, नवीन पंत, पं0 [illegible] पं0 सुनील शास्त्री, पं0 संजीव गौड़ व विपुल

शर्मा के नाम उल्लेखनीय हैं।

संगीत पक्ष को जिन्होंने अपनी स्वर लहरियों व वाद्यों से संवारा उनमें प्रमुख हैं पं० राजबहादुर, पं० सुभाष, उमेशचन्द्र गुप्ता, पं० रामगोपाल, पं० सूर्यप्रकाश, पं० उदित नारायण, श्रीमती ऊषा, पं० अनिल तिवारी, चन्द्रसेन चंचल, ऋषि व गोपाल आदि।

इसके अतिरिक्त शिवाराधन मण्डल को इस स्वरूप तक पहुँचने में ओमप्रकाश अग्रवाल का अतुलनीय योगदान रहा है। मण्डल के प्रत्येक कार्य में उनकी छाप अलग ही दृष्टिगोचर होती है।

इस मण्डल द्वारा बरेली के अतिरिक्त दिल्ली, गाजियाबाद, मुरादाबाद, रामपुर, संभल, पीलीभीत, चन्दौसी, बीसलपुर, गोला गोकर्णनाथ, भमरौआ, बाधधाम, हरिद्वार आदि अनेकानेक स्थानों पर प्रदोष–पूजन आयोजित किये जा चुके हैं।

इस मण्डल को एक विशिष्ट उपलब्धि भी हासिल है जबकि अन्य सभी मण्डल यो तो प्रचलित भजन गाते हैं या फिल्मी धुनों पर आधारित भजन गाना उनकी मजबूरी रही है। मण्डल के सदस्य स्वर्गीय पं० श्री कृष्ण शर्मा व ओमप्रकाश अग्रवाल द्वारा प्रत्येक वर्ष भगवान के नये से नये भजनों का सृजन कर उन्हें गाया गया इससे प्रचुर मात्रा में साहित्य सेवा भी हुई।

इस मण्डल द्वारा समय–समय पर सन्तों–विद्वानों का सम्मान भी किया जाता रहा है। आचार्य मनोज शास्त्री, कामावन के स्वामी चैतन्यपुरी, वृन्दावन के स्वामी मौनी बाबा व अयोध्या के अनेक सन्तों को इस मण्डल द्वारा सम्मानित किया जा चुका है।

यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि प्रदोष–पूजन में किसी प्रकार का चढ़ावा व दान–दक्षिणा किसी भी कीमत पर स्वीकार नहीं की जाती है। यदि व्यक्ति चांहें कि मैं इतने अधिक विद्वानों, पुरोहितों व संगीतज्ञों को एक साथ एकत्र कर अपने यहाँ पूजन करवा लूँ तो कम से कम आठ–दस हजार रूपयों की आवश्यकता पड़ेगी परन्तु प्रदोष–पूजन में कोई पैसा नही लिया जाता। मण्डल का मात्र उद्देश्य है कि धर्म की जय हो, अधर्म का नाश हो, प्राणियों में सद्भावना हो तथा विश्व का कल्याण हो।

जितनी हैं शक्तियाँ मनुज को, प्राप्त हुई इस जग के भीतर।
उन्हें दान करते रहना ही, है मनुष्य का धर्म यहाँ पर।।

विषय क्रम :

●

ईशानकोणयोः मध्ये दीपं संस्थाप्य :-

तत्र कर्ता शुभदिने सुस्नातः कृततिलकः अधोधौतवस्त्रे वाससी परिधाय सपत्नीकः पूजामण्डपे आगत्य शिखाबन्धनं यज्ञोपवीत-धारणञ्च कृत्वा कृततिलकः मालाधारणं च कृत्त्वा, प्राङ्मुख उपविश्य प्राणायामं विधाय—

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं सः बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।

इस मन्त्र का उच्चारण करके अपने ऊपर जल छिड़के।

आचम्य (तीन बार)

१- केशवाय नमः। २- माधवाय नमः। ३ गोविन्दाय नमो नमः। (कहकर हाथ धोवे)

एवं

ॐ पुनन्तु मां देवजनाः पुनन्तु मनसा धिय।
पुनन्तु विश्वाभूतानि जातवेदः पुनीहि माम्।।

गणेश स्मरण इष्टदेवस्मरणं च कुर्यात् :-

गाइए गणपति जगबन्दन। संकर सुवन, भवानी-नन्दन।।
सिद्धि-सदन, गजवदन विनायक। कृपा सिन्धु, सुन्दर सब लायक।।
मोदक-प्रिय मुद-मंगलदाता। विद्या-वारिधि, बुद्धि-विधाता।।
माँगत तुलसिदास कर जोरे। बसहिं रामसिय मानस मोरे।।

पुनः इष्टदेवस्मरणं कुर्यात् :-

भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाऽक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवासस्तनूभिर्व्यशेमा देवहितं यदायुः।।

मंगलं भगवान् विष्णुर्मङ्गलं गरुडध्वजः।
मंगलं पुडरीकाक्षः मङ्गलायतनोः हरिः।।
यं मंगलं मंगल सः करोति। यः मंगलं मंगल माप्नोति।।
यः मंगलं मंगल राजगेहे। तम् मंगलं सिद्धमेति।।
शुक्लांबरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये।।

गुरुं नत्वा :-

या शारदा विमलबुद्धिविवेकधात्री
सूते च या निखिलवैभवमीड्यमाना।
नित्यं दयापरवशा सुखशान्तिहेतुः।
सा मे सदा भगवती रमतां हृदाब्जे।।

पवित्रीधारणम् :-

हे पवित्रे
हे देव स्रष्टा जगत के करते विनय हम आपसे।
दुर्गुण दुरित सब दूर कर दो आज सबसे शीघ्र ही।।
कल्याण जिससे हो हमारा बुद्धि बल मंगलकरण।
उन भव्य भावों को भरो हम हैं तुम्हारी ही शरण।।

गायत्री मन्त्र से शिखाबन्धन :--

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य
धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।।
ॐ ब्रह्मवाक्यसहस्रेण शिववाक्यशतेन च।
विष्णुनामसहस्रेण शिखाग्रन्थिं करोम्यहम्।।

यज्ञोपवीतधारणम् प्रथमंविनियोगः।

यज्ञोपवीतमिति मन्त्रस्य परमेष्ठी ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः लिंगोक्त-देवता श्रौतस्मार्तकर्मानुष्ठानसिद्ध्यर्थं शिवविष्णुभगवती-पूजनाधिकारसिद्धिहेतवे यज्ञोपवीतपरिधारणे विनियोगः।

तन्मत्रः:-

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रज्ञापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्मग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।

स्वतः एवं सपत्नीको वा (दम्पती) शरीरशुद्ध्यर्थं प्रायश्चित्तं कुर्यात्:-

संकल्पः-

हरिः ॐ तत्सत् विष्णुर्विष्णु र्विष्णुः अथ पूर्वोक्तफलावाप्तये (प्राप्तये) मासानां मासोत्तमे मासे.... पक्षे..... तिथौ....... वासरे......... नक्षत्रे...... शर्मा/ वर्मा/ गुप्तः/ दासः सपत्नीकोऽहं करिष्यमाण श्रीशिवाराधनमण्डलद्वारा पार्थिवपूजनरुद्राभिषेक-कर्मणि अधिकारसिद्ध्यर्थं कायिकवाचिकमानसिक्सांसर्गिक दोषशान्त्यर्थं शमनार्थं पूजनार्थं शरीरशुद्ध्यर्थं च इदं द्रव्यं पुरोहिताय आचार्याय दास्ये तथा गोदुग्धपानार्थं दक्षिणां सम्प्रददे।

हस्ते पुष्पाणि अक्षतांश्च गृहीत्वाः-

ॐ स्वस्ति श्रीमन्महागणाधिपतये नमः। श्री लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। श्री उमामहेश्वराभ्यां नमः।

श्रीसीतारामचन्द्राभ्यां नमः। श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः।

श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीभ्यो नमः। वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां

नमः। श्री शची पुरन्दराभ्यां नमः। श्रीगुरुचरण कमलेभ्यो नमः। सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। सर्वेभ्यो ऋषिभ्यो नमः। इष्ट देवताभ्यो नमः। कुलदेवताभ्यो नमः। ग्रामदेवताभ्यो नमः। स्थानदेवताभ्यो नमः। वास्तुपुरुषाय नमः। सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः। पुण्यं पुण्योहम् दीर्घमायुरस्तु।

हस्ते संधृत्य पुष्पमादाय सुमुखश्चेति पठित्वा :-

ॐ सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः।।
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि।।
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते।।
वक्रतुण्ड महाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ।
अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा।।
गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

एतत्कर्मप्रधानदेवतासाम्बशिवाय नमः।

पुष्पं गृहीत्वा भद्रसूक्तशान्तिपाठः-

ॐ आ नो भद्राःक्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो ऽ अपरीतास उद्भिदः॥ देवा नो यथा सदमिद् वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे ॥१॥ देवानां भद्रा सुमतिऋजूयतां देवानःॐरातिराभि नो नि वर्तताम्। देवानांॐ सख्यमुप सेदिमा वयंदेवा न आयुः प्र तिरन्तु

जीवसे।।२।। तान पूर्व्वया नि विदा हूमहे वयं भगं मित्रमदितिं दक्षमस्त्रिधम्। अर्य्यमणं वरुणं सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत्।।३।। तन्नो व्वातो मयोभु वातु भेषज तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः। तद् ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना श्रृणुतंधिष्ण्या युवम्।।४।। तमीशान ञ्जगतस्ततस्थुषस्पतिं धियं जिन्नवमवसे हूमहेवयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।।५।। स्वस्तिन इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः स्वस्ति नस्ताक्ष्योंऽ अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।।६।। पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभंयावानो विदथेषु जग्मयः। अग्निर्जिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवाऽ अवसाऽऽगमन्निह।।७।। भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाऽक्षभिय्यजत्राः स्थिरै रंगैस्तुष्टुवा सस्तनूभिव्वर्यशेम देवहितं यदायुः।।८।। शतमिन्नु शरदोऽअन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसंतनूनाम्। पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मद्धया रीरिषतांयुग्गन्तोः।।९।। अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः। विश्वे देवा अदितिः पञ्च जना अदितिर्ज्जातमदितिर्ज्जनित्वम् ।।१०।। ओ३म् स्वस्ति नऽ इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषा व्विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्योंऽरिष्टनेमि स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।।११।। ओ३म् पयः पृथिव्यां पयऽ ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः।। पयस्वती प्रदिशः सन्तु मह्यम्।।१२।। ओ३म् विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्नस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्द्ध्रुवोऽसि। वैष्णवमसि विष्णवे त्वा।।१३।। ओ३म् अग्निर्देवता

व्वातो देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता वसवो देवता रुद्रा देवताऽऽदित्या देवता मरुतो देवता विश्वेदेवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता॥१४॥ ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष छशान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः सर्वछशान्तिरंव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि॥१५॥ ॐ गायत्री त्रिष्टुब्जगत्यनुष्टुपंक्त्या सह बृहत्युष्णिहाककुप्स्सूचीभिः शम्म्यतुंवा द्विपदायाश्चच्चतुष्पदास्त्रिपदा याश्च्चषट्पदाः व्विच्छन्दा याश्च सच्छन्दा सूचिभिः शम्यन्तु त्त्वा॥१६॥ सहस्तोमाः सहच्छन्दसऽ आवृतः सहप्प्रमाऋषयःसप्तदेव्याः। पूर्वेषाम्पन्था मनुचरेण छश्यधीराऽअन्वावालेभिरेत्थ्यो नरश्मीन्॥१७॥ यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्यत थैवैति। दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥१॥ येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः। यदपूर्वंयक्षमन्तः प्रज्ञा नां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु॥२॥ यत्प्रज्ञानमुत चेतोधृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु। यस्मान्न ऋते किञ्चन कर्म क्रियते तन्मे मनःशिवसंकल्पमस्तु॥३॥ येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत्परिगृहीतममृतेन सर्वम्। येन यज्ञस्तायतेसप्तहोता तन्मेमनः शिवसंकल्पमस्तु॥४॥ यस्मिन्नृचः साम यजूँषि यास्मिन् प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः। यस्मिंश्चितः सर्वमोतम्प्रजानां तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥५॥ सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेऽभी-शुभिर्वाजिन इव। हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं ञचविष्ठं तन्मे मनः शिव

सङ्कल्पमस्तु॥६॥

यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु।
शन्नः कुरु प्रजाभ्योऽभयन्नः पशुभ्यः॥
ओ३म् शान्तिर्शान्तिः सुशान्तिर्भवतु।

ततः एतत्तेति पठित्वा :-

ओ३म् एतत्ते देव सवितर्यज्ञं प्राहुर्बृहस्पतये ब्रह्मणे। तेन यज्ञ मव तेन यज्ञपतिं तेन मामव॥

प्रतिज्ञासंकल्पः-

हरिः ओ३म् तत्सत् विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः ओ३म् श्रीस्वस्ति श्रीमन्मुकुन्दः सच्चिदानन्दस्य आज्ञया प्रवर्तमानस्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयप्रहरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्यावर्तैक-देशान्तर्गते अमुकक्षेत्रे (बरेलीनामक्षेत्रे) विक्रमशके बौद्धावतारे अमुकनामसंवत्सरे (विकृतिनामसंवत्सरे) अमुकायने अमुकऋतौ महामाङ्गल्यप्रदे मासोत्तमे मासे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे एवं ग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अद्य अमुकोऽहं श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं ममोपात्तदुरितक्षय-द्वारा आध्यात्मिकआधिदैविकआधिभौतिकत्रिविधं ताप क्षयार्थम् धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधपुरुषार्थसदभीष्टसिद्ध्यर्थं अखिलकोटि-ब्रह्माण्डनायकस्य अकारणकरुणस्य करुणावरुणालयस्य भक्तवाञ्छाकल्पतरोः सच्चिदानन्द-अनन्त-अद्वय-अखण्ड-अचल-अज-अक्रिय-कूटस्थ-परब्रह्मपरमात्मनः अखिलेश .रस्य

परमेश्वरस्य सर्वेश्वरस्य श्रीसदाशिवचरणयोः अखण्डानुराग-अविच्छिन्नप्रीतिसम्पादनार्थं धर्मग्लान्यधर्माभ्युत्थान निवृत्तिपूर्वक-धर्मसंस्थापनार्थं विश्वकल्याणार्थं गोरक्षार्थम् च यथा मिलितोपचार-द्रव्यैः न्यासपूर्वकम् श्रीपार्थिवलिङ्गे सर्वदेवमय सपरिवारस्य लिङ्ग-पूजनं करिष्ये, तत्रादौ लिङ्गसंघट्टनम् वरुणपूजनं च करिष्ये।

हाथ में लिये हुए जलादि को पात्र में छोड़ दें।

मंडपद्वारपूजनम् जलेन संप्रोक्ष्य

देहल्यां दक्षिणं – ॐ गं गणपतये नमः।।

वामे -- ॐ दुं दुर्गायै नमः।।

उपरि – ॐ वं वटुकाय नमः।।

देहल्यां – ॐ अस्त्राय फट्, संप्रोक्ष्य।

द्वारोपरि – ॐ सं सरस्वत्यै नमः।।

ततः द्वारपूजनं विधाय

पूर्वे – ॐ नं नन्दिने नमः।

अग्निकोणे – ॐ मं महाकालाय नमः।

दक्षिणे – ॐ गं गणपतये नमः।

नैऋत्ये – ॐ वृँ वृषभाय नमः।

पश्चिमे – ॐ भृँ भृगरिध्मे नमः।

वायव्ये – ॐ स्कँ स्कन्दाय नमः।

उत्तरे – ॐ उमायै नमः।

ईशाने – ॐ चँ चण्डीश्वराय नमः।

अग्रे सम्मुखे – सोमसूर्ययोः चाग्रतो ॐ वीरभद्राय नमः।

पृष्ठतः – ॐ कीर्तिमुखाय नमः।

अग्रे पीठपूजां कारयेत्

पूर्वादारभ्य ईशानपर्यन्तं पूजयेत्–

ॐ वामायै नमः। ॐ ज्येष्ठायै नमः। ॐ श्रेष्ठायै नमः ॐ रौद्रायै नमः। ॐ काल्यैं नमः। ॐ कलविकरिण्यै नमः। ॐ बलविकरिण्ये नमः। ॐ बलप्रमथिन्यै नमः। ॐ सर्वभूतदमिन्यै नमः। ॐ मनोन्मनिन्यै नमः। ॐ नमो भगवते सकल-योगापीठात्मने सदाशिवाय नमः। **पार्थिव पक्षे।।** ॐ ह्रौं ह्रीं जूँ सः हराय नमः। इति मृद्ग्रहणम्। (तत्तद्द्रव्यग्रहणम् वो) ॐ ह्रौं ह्रीं जूँ सः शूलपाणये नमः। **प्रतिष्ठा।** ॐ ह्रौं ह्रीं जूँ सः ॐ पिनाकपाणये नमः।।

ध्यानम्

पुष्प लेकर हाथ जोड़कर शंकर भगवान् का स्मरण करें–

कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदा वसंतं हृदयारविन्दे भवं भवानीसहितं नमामि।।
वन्दे महेशं सुरसिद्धसेवितं भद्रद्रुमैः पूजित पादपंकजम्।
विद्याप्रदं विघ्नविनाशहेतुम् श्रीविश्वनाथं गिरिजासहायम्।

लिङ्गनिर्माणम्

शिवलिङ्गनिर्माणार्थ निम्नलिखित मन्त्र से मिट्टी कूटें :–

ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमः।
भवे भवेनातिभवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः।।
ॐ ह्रौं ह्रीं जूँ सः हराय नमः।

निम्नलिखित मन्त्र से मिट्टी में जल छिड़कें :-

ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः। कालाय नमः कलविकरणाय नमो बल विकरणाय नमो। बलाय नमः। बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः।।

निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर सनी हुई मिट्टी का पिण्ड बनावें :-

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।

निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर शिवलिङ्ग का निर्माण करें :-

ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानाम्। ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदा शिवोम्।

कलशस्थापन

जल भरा कलश रखकर कलावा बाँधकर उस पर '卐' स्वस्तिक बनाकर गंगाजल डालकर वरुण का आवाहन करें :-

ॐ कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः।
कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः।।
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः।
गायत्री चात्र सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा।
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः।
ब्रह्माण्डोदरतीर्थानि करैः स्पृष्टानि तैरव।
तेन सत्येन मे देव तीर्थं देहि दिवाकर।।

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् संनिधिं कुरु।।
देवदानवसम्वादे मथ्यमाने महोदधौ।।
उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम्।।
त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः।।
शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः।
आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः।।
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः।
त्वत्प्रसादादिमां पूजां कर्तुमेहि जलोद्भव।
सान्निध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा।।

कलश पर गन्धाक्षतपुष्प अर्पण करके प्रार्थना करें :–

नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय सुश्वेतहाराय सुमंगलाय।
सुपाशहस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते।।
ॐ भूर्भुवः स्वः भो वरुण इहाऽऽगच्छ इह तिष्ठ सुप्रतिष्ठ वरदो भव।।

जलसंस्कारः

आराधक पूजनार्थ जल छाने, तीर्थ जल मिलावे।

ॐ आपो अस्मान्मातरः शुन्धन्तु घृतेन वो घृतप्वः पुनन्तु। विश्व ꣳ हिरिप्रं प्रवहन्ति देवी-रुदिदाभ्यः पूत एमि।। दीक्षा तपसो स्तनूरसि तात्वा शिवा ꣳ शतमां परिदधे भद्रं वर्णं पुष्यन्

स्वशरीर न्यास

निम्नलिखित मन्त्रों से स्वशरीर में न्यास करे।

मुखे :– ॐ अग्निर्मेवाचिश्रित: वाक् हृदये हृदयं मयि अहममृते अमृतं ब्रह्मणि।

हृदये :– ॐ वायुर्मे प्राणे श्रित: प्राणो हृदये हृदयं मपि अहममृते अमृतं ब्रह्मणि।

चक्षुषी :– ॐ सूर्यो मे चक्षुषि श्रित: चक्षुर्हृदये हृदयं मयि अहममृते अमृतं ब्रह्मणि।

वक्ष :– ॐ चन्द्रमा मे मनसि श्रित: मनो हृदये हृदयं मयि अहममृते अमृतं ब्रह्मणि।

श्रोत्रे :– ॐ दिशो मे श्रोत्रे श्रिता: श्रोत्रं हृदये हृदयं मयि अहममृते अमृतं ब्रह्मणि।

लिङ्गम् :– ॐ आपो मे रेतसि श्रिता: रेतो हृदये हृदयं मयि अहममृते अमृतं ब्रह्मणि।

शरीरं :– ॐ पृथ्वी मे शरीरे श्रिता: शरीरं हृदये हृदयं मयि अहममृते अमृतं ब्रह्मणि।

रोमकूपा :– ॐ ओषधि वनस्पतयो मे लोमसु श्रिता: लोमानि हृदये हृदयं मयि अहममृते अमृतं ब्रह्मणि।

सर्वाङ्गम् :– ॐ इन्द्रो मे बले श्रित: बलं हृदये हृदयं मयि अहममृते अमृतं ब्रह्मणि।

मस्तक :– ॐ पर्जन्यो मे मूर्ध्नि श्रित: मूर्द्धा हृदये हृदयं मयि अहममृते अमृतं ब्रह्मणि।

हृदयं स्पृशेत् :– ॐ ईशाने मे मन्यु श्रित: मन्युर्हृदये हृदयं

मयि अहममृते अमृतं ब्रह्मणि।

वक्षः स्पृशेत् :- ॐ आत्मा आत्मनि श्रितः आत्मा हृदये हृदयं मयि अहममृते अमृतं ब्रह्मणि।

सर्वाङ्ग में न्यास करे।

ॐ पुनर्मआत्मा पुनरायु रागात्पुनः प्राणः पुनराकृतमागात्।
वैश्वानरो रश्मिभिर्वावृधानः अन्तस्तिष्ठत्वमृतस्य गोपाः।।

स्थापित शिवलिङ्ग में सर्वदेवमय भावना से चावल फूल छोड़े :-

सर्वदेवावाहनम्

गणपतिः

ॐ गणानां त्वा गणपति ७ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति ७ हवामहे निधीनां त्वा निधिपति ७ हवामहेव्वसोमम आहम जानि गर्ब्भधमात्वमजासि गर्ब्भधम् ।।१।।

ॐ विनायकं महत्पुण्यं सर्वविघ्नविनाशनम्।
लम्बोदरं त्रिनेत्रं च गणेशमाह्वयाम्यहम् ।।२।।
मंगलमूर्तये श्रीगणेशाय नमः।।

विष्णुः- ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् समूढमस्य पा ७ सुरे त्रीणि पदा विचक्रमे विष्णुर्गोपा अदाभ्यः।। भगवते श्रीविष्णवे नमः।।

सूर्यः- ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च।
हिरण्मयेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ।।१।।
ॐ नमः सवित्रे जगदेकचक्षुषे जगत्प्रसूतिस्थिति नाशहेतवे।

त्रयीमयाय त्रिगुणात्मधारिणे विरञ्चिनारायणशंकरात्मने ।।२।।
ध्येयः सदा सवितृमण्डलमध्यवर्ती नारायणः सरसिजासन सन्निविष्टः।
केयूरवान् मकरकुण्डलवान्किरीटी हारी हिरण्यमयवपुर्धृतशंखचक्रः।।
प्रत्यक्षदेवाय भगवते श्रीसूर्याय नमः।

स्कन्द :- ॐ यदक्रन्दः प्रथमञ्जायमान ऽ उद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात्।
श्येनस्य पक्षा हरिणस्यर्बाहू उपस्तुत्यं मयि जातं तेऽ अर्व्वन्।।

कीर्तिमुख :- मानस्तोके तनये मानऽ आयुषि मानो गोषु मानोऽ अश्वेषुरीरिषः मानो व्वीरान्रुद्र भामिनोव्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे।।
कीर्तिमुखाय नमः कीर्तिमुखमावाहयामि। असवे स्वाहा। वसवे स्वाहा। विभुवे स्वाहा। विवस्वते स्वाहा। गणश्रिये स्वाहा। गणपतये स्वाहाभिमुखे स्वाहाधिपतये स्वाहा। शूषाय स्वाहा। स ꣳ सर्पाय स्वाहा। चन्द्राय स्वाहा। ज्योतिषे स्वाहा। मलिम्लुचाय स्वाहा। दिवापतये स्वाहा। श्रीकीर्तिमुखाय नमः।।

कुबेर :- ॐ कुविदङ्ग यवमन्तो यव चिद्यथा दान्त्य नुपूर्वं वियूय। इहे हैषां कृणुह्वि भोजनानि भे वर्हिषो नम उक्तिं यजन्ति।
ॐ वय ꣳ सोमव्रते तवमनस्तनूषु विभ्रतः प्रजावन्तः सचेमहि।।
श्रीकुबेराय नमः।।

वीरभद्र :- ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमा क्षभिर्यजत्रा।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा ꣳ सस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः।

ॐ भद्रो नोऽ अग्निराहुतो भद्राराति सुभग भद्रोऽअध्वरः भद्रोऽउत प्रशस्तयः।। श्रीवीरभद्राय नमः।।

श्रीपार्वतीजी :– ॐ गौरी निर्माय सलिला नितक्षत्येकपदी द्विपदी सा चतुष्पदी अष्टापदी नवपदी बभूवुर्षी सहस्राक्षरा परमे व्योमन्। ॐ समख्ये देव्याधियासन्दक्षिणयोरुचक्षसा मामऽ आयुः प्रमोषीर्मोऽ अहन्तव्वीरं विदेयतव देवि सन्दृशि। भगवत्यै श्रीपार्वत्यै नमः।। गौरीमावाहयामि।।

नन्दी :– ॐ चत्वारि शृंगास्ययोऽ अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्तस्तासोऽअस्य।। त्रिधा बद्ध वृषभो रोरवीति महोदेवो मर्त्यं ६।। आविवेश। नन्दिने नमः, नन्दीश्वरमावाहयामि।

सर्प :– ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथ्वी मनु।
येऽ अन्तरिक्षे ये दिवितेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।।

भगवान शंकर का ध्यान आवाहन (साक्षात् पुष्पं गृहीत्वा)

ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च।।

ॐ एह्येहि गौरीश पिनाकपाणे शशाङ्कमौले वृषभाधिरूढ़।
देवाधिदेव महेश नित्यं गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।।

शिवशंकरमीशानं द्वादशाब्दार्धलोचनम्। उमया सहितं देवं शम्भुमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः पुरुषं साम्ब शिवमावाहयामि।।

ॐ आगच्छ पञ्चानन चन्द्रमौले प्रसीद संसारभयार्तिनाशिन्।
करोमि ते पादसरोजपूजां गृहाण मृत्युञ्जय भक्तवत्सल।।

आगच्छ भगवन् देव स्थाने चात्र स्थितो भव।
यावत्पूजां करिष्यामि तावत् त्वं सुस्थिरो भव।।

प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात्

ॐ अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठा मन्त्रस्य ब्रह्मा विष्णुर्महेश्वरा: ऋषय: ऋग्यजु:सामानि च्छन्दासि जगत्सृष्टि: प्राणशक्तिर्देवता आं बीजं ह्रीं शक्ति: क्रीं कीलकं प्राणप्रतिष्ठापने विनियोग:।

दक्षिण हाथ की अनामिका अँगुली से शिवलिङ्ग का स्पर्श करते हुये प्राण प्रतिष्ठा करें।

ॐ आँ ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं स: सोहम् साम्ब-सदाशिवस्य सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनस्त्वक्चक्षु:श्रोत्रजिह्वाघ्राणवाक्-पाणिपादपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।।
ॐ हौं हीं जूँ स: हराय नम:।। ॐ हौं हीं जूँ स: शूलपाणये नम:।।
हौं हीं जूँ स: ॐ पिनाकपाणये नम:।।

लिङ्गे सर्वं प्रतिष्ठितम्

हाथ जोड़कर शिवलिङ्ग में सम्पूर्ण देवों का ध्यान करें :-

ब्रह्मा हरिश्च भगवान् विश्वेदेवा उमा हरि:।
लक्ष्मीर्धृति: स्मृति: प्रज्ञा विधिर्दुर्गा शची तथा।।
रुद्राश्च वसव: स्कन्दो विशाख: शाख एव च।
नैगमयेश्च भगवान् लोकपाला ग्रहास्तथा।।
सर्वे नन्दिपुरोगाश्च गणा: गणपति: प्रभु:।
पितरो मुनय: सर्वे कुमाराद्याश्च सत्तमा:।।
आदित्या वसव: साध्या अश्विनौ च भिषग्वरौ।

विश्वेदेवा समस्ताश्च पशवः पक्षिणो मृगाः।।
ब्रह्मादिस्थावरं यच्च सर्वं लिङ्गे प्रतिष्ठितम्।।
ॐ श्रीगणपति-विष्णु-सूर्य-स्कन्द-कुबेर-वीरभद्र-कीर्तिमुख-पार्वती-नन्दिसहिताय सर्वदेवमयाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय परब्रह्मपरमात्मने श्रीसदाशिवाय नमः।।

सन्निधापनम्

स्वामिन् सर्वजगन्नाथ यावत् पूजावसानकम्।
तावत्त्वम् प्रीति भावेन लिंगेऽस्मन् सन्निधो भव।।
अनन्या तव देवेश मूर्तिशक्तिरियं प्रभो।
सान्निध्यं कुरु तस्यां त्वं भक्तानुग्रह तत्परः।।

स्थापनम्

ॐ तवेयं महिमा मूर्तिस्तस्मित्वं सर्वगं शुभम्।
भक्तिस्नेहसमाकृष्टं दीपवत्स्थापयाम्यहम्।।

स्वागतम्

यस्य दर्शनमिच्छन्ति देवा स्वाभीष्टसिद्धये।
तस्मै ते परमेशाय स्वागतं स्वागतं भवेत्।।
कृतार्थोऽनुगृहीतोऽस्म सफलं जीवनं मम।
आगतो देव देवेश सुस्वागतमिदं पुनः।।
गमः शोकी गतं दुःखं गतं दारिद्र्यमेव च।
आगश्रा सुखसम्पत्तिः पुण्योऽहं तव दर्शनात्।।

ध्यानम्

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं
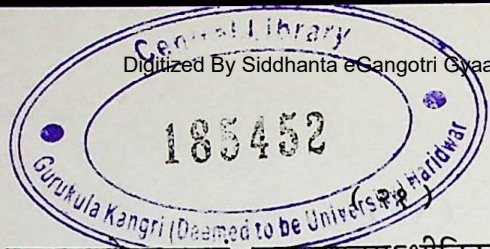
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराऽभीतिहस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात्स्तुतममरगणैःव्याघ्रकृत्तिं वसानं।
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्।।
ॐ दक्षोत्संगनिषण्णकुञ्जरमुखं प्रेम्णा करेणामृशन्।
वामोरुस्थितवल्लभाङ्कहृदयं स्कन्दं परेणामृशन्।।
इष्टमिति वरद्वयं करयुगे विभ्रत्प्रसन्ना ननो।
भूयान्नः शरदिन्दुसुन्दरतनुः श्रेयस्करः शङ्करः।।
ॐ चन्द्रकोटिप्रतीकाशं त्रिनेत्रं चन्द्रभूषणम्।
आपिंगलजटाजूटं रत्नमौलिविराजितम्।।
दधानं नागवलयं केयूराङ्गदमुद्रिकाम्।।
व्याघ्रचर्मपरीधानं रत्नसिंहासने स्थितम्।।
कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदा वसंतं हृदयारविन्दे भवं भवानीसहितं नमामि।।
ॐ हौं हीं जूँ सः शिवाय नमः।।

सप्तमुद्रा

ॐ आवाहितो भव। स्थापितो भव। सन्मुखो भव। सन्निरुद्धो भव। विमलीकृतो भव। अवगुण्ठितो भव। अमृतीकृतो भव।

अक्षत् छोड़ें।

बुलाऊँ आपको नटवर पधारो आज तुम घर पर।
न कर लूँ जब तलक अर्चन सदा सन्मुख रहो तब तक।।

आसनम्

ॐ चतुः स्त्रक्तिर्नाभिर्ऋतस्य सप्रथाः सनो विश्वायुः सप्रथाः सनः

सर्वायुः सप्रथाः। अपद्वेषो अपह्वरो न्यव्रतस्य पश्चिम।
रम्यं विचित्रं मणिपीठसंज्ञकम्, सिंहासनं साष्टदलाब्जयुक्तम्।
वामादिशक्त्यक्तयन्वितमीश तुभ्यं, नमः शिवायेति समर्पयामि।।
विश्वेश्वर महादेव महेशान परात्पर।
मया समर्पितं रम्यमासनं प्रतिगृह्यताम्।।
यह आसन लीजिये शंकर बना रमणीय कोमल है।
पधारो आप आसन पर सजाकर आज लाया हूँ।।
श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः। आसनार्थे बिल्वपत्राणि, पुष्पाणि समर्पयामि।।

पाद्यम्

पात्र में जल अक्षत पुष्प सरसों दूर्वा डालें ॐ नमः स्नुत्याय च पथ्याय च नमः काठ्याय च नीप्याय च नमः कुल्याय च सरस्याय च नमो नादेयाय व वैशन्ताय च।।
श्यामाकदूर्वाब्जसिताभ्रविष्णुक्रान्तान्वितं धर्मवतीजलैर्वा।
गृहाण सर्वेश्वर पाद्यमद्य नमः शिवायेति समर्पयामि।।
गङ्गोदकं निर्मलं च सर्वसौगन्ध्यसंयुतम्।
पादप्रक्षालनार्थाय दत्तं ते प्रतिगृह्यताम्।।
सुगन्धित सर्व गन्धों से सुहावन जल है ये स्वामी।
चरण धोने को लाया हूँ करो स्वीकार हे शंकर।।
श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः। पादयोः पाद्यं समर्पयामि।।

अर्घ्यम्

पात्र में जल, दुग्ध, दूर्वा, पुष्प, यव, तिल, अक्षत, कुंकुम

डालकर इस प्रकार बोलें :-

ॐ मानस्तोके तनये मानऽ आयुषि मानो गोषु मानोऽ अश्वेषु रीरिषः मानो ब्वीरान्रुद्र भामिनो व्वधीर्हविष्मन्तः सदामित्वा हवामहे।।

कुशाग्रगन्धाक्षतपुष्पसर्षपैः दूर्वायवक्षीरतिलैः समन्वितम्।
गृहाण शैलेन्द्रसुतापतेऽर्घ्यं नमः शिवायेति समर्पयामि।।

यही तो अर्घ्य का जल है सुशोभित गन्ध पुष्पों से।
यही हस्तार्घ्य लाया हूँ करो स्वीकार हे शंकर।।

नमस्ते देव देवेश नमस्ते करुणाम्बुधे।
करुणां कुरु मे देव गृहाणाऽर्घ्यं नमोऽस्तुते।।

आचमनम्

पात्र में लौंग तथा कर्पूर डालकर इस प्रकार बोले :-

ॐ त्रियम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

कर्पूरकङ्कोललवङ्गजातीसमन्वितैर्विष्णुपदोद्भवाद्भिः,
श्रीपञ्चवक्त्राचमनं कुरु त्वं नमः शिवायेति समर्पयामि।।

सर्वतीर्थसमायुक्तं सुगन्धिं निर्मल जलम्।
आचम्यतां मया दत्तं गृहीत्वा परमेश्वर।।

यह तीर्थोदक सुगन्धित है सुशोमन है सुशीतल है।
इसे आचमन को लाया हूँ करो स्वीकार हे शंकर।।

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः। मुखेषु आचमनीयं समर्पयामि।।

मधुपर्कनिवेदनम्

पात्र में दधि, घी, मधु तथा बिल्वपत्र रखकर भगवान को

निवेदन करे।

ॐ सर्वकालुष्यहीनाय परिपूर्ण सुखात्मने।
मधुपर्कमिमं देव कल्पयामि प्रसीद में।।
आज्यं दधि मधु श्रेष्ठं पात्रयुग्मसमन्वितम्।
मधुपर्कं गृहाण त्वं प्रसन्नो भव शङ्कर।।
यही मधुपर्क है स्वामी सुदधि मधु घृत से जो निर्मित।
सजाया युग्म पात्रों में करो स्वीकार हे भगवान।।
भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः। मधुपर्कं समर्पयामि।

अथ तैलार्पणम्

स्नेहं गृहाण स्नेहेन लोकनाथ महायशः।
सर्वलोकेश शुद्धात्मन् ददामि स्नेहमुत्तमम्।।
जो मलयाचल के चन्दन से अगरुमिश्रित सुगन्धित है।
इसे स्नानार्थ लाया हूँ करो स्वीकार हे भगवन्।।

उद्वर्तनम्

गुलाब जल, चन्दन तथा केसर का उबटन बनावे

नाना सुगन्धि द्रव्यं च चन्दनं केसरान्वितम्।
उद्वर्तनं महादेव गृहाण परमेश्वर।।
अनेकों गन्ध से मिश्रित सुहावन जलं जो निर्मल है।
यह उद्वर्तन को लाया हूँ करो स्वीकार है भगवन्।।

जलस्नानम्

ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो
व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च

वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमो नमः।।
हिमालयोद्भूतसुगाङ्गवारिभिर्विनिर्मलैर्विश्वपवित्रकारकैः।
स्नानं कुरु त्वं हिमशैलजापते नमः शिवायेति समर्पयामि।।
यह गंगा सरस्वती रेवा पयोष्णी नर्मदा का जल।
इसे स्नानार्थ लाया हूँ करो स्वीकार हे शंकर।।
भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय स्नानीयं जलं समर्पयामि।

पयः(दुग्ध)स्नानम्

ॐ पयः पृथिव्यां पयऽ ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः।
पयस्वतीप्रदिशः सन्तु मह्यम्।।
कामधेनुसमुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम्।
पावकं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्।।
उत्पन्न दुग्ध कामधेनु से जो पावन है यज्ञ-जीवन में।
इसे स्नानार्थ लाया हूँ करो स्वीकार हे शंकर।।
भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः पयःस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानम्

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्ध बालोमणि बालस्तऽ आश्विनाः।
श्वेतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णायामा ऽ
अवलिप्ता रौद्रा नभो रूपाः पार्जन्याः।।
यह शुद्धोदक सुहावन है सुगन्धित है सुशीतल है।
इसे स्नानार्थ लाया हूँ करो स्वीकार हे भगवन्।।

दधिस्नानम्

ॐ दधि क्राब्णोऽकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः।

सुरभि नो मुखा करत् प्रण आयूं षि तारिषत्।।

पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।
दध्यानीतं मया देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

लिया है पात्र में दधि भी मधुर अरु अम्ल अति उत्तम।
इसे स्नानार्थ लाया हूँ करो स्वीकार हे शंकर।।

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः। दधिस्नानं समर्पयामि।
दधिस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

घृतस्नानम्

ॐ घृतं घृतपावानः पिवतव्वसां वसापावानः पिवतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिशऽ आदिशो विदिशऽ उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा।।

नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसन्तोषकारकम्।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

यह नवनीत निर्मित है सजाया पात्र भी घृत का।
इसे स्नानार्थ लाया हूँ करो स्नान हे शम्भो।।

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय् नमः घृत स्नानं समर्पयामि।
घृतस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

मधुस्नानम्

ॐ मधु व्वाताऽ ऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः। माध्वोर्न्न सन्त्वोषधीः।। मधुनक्त मुताषसी मधुमत्पार्थिव रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता।। मधुमान्नो वनस्पतिर्मधु मां अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः।।

तरुपुष्प समद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधुः।
तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।
जिसे तरुपुष्प से चुन चुन बनाते हैं मधुर मधुकर।
यह मधु स्नानार्थ लाया हूँ करो स्वीकार हे शंकर।।
भगवते श्रीसाम्बसदा शिवाय नमः। मधुस्नानं समर्पयामि।
मधुस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

शर्करास्नानम्

ॐ अपा ꣳ रसमुद्वयस ꣳ सूर्ये सन्त ꣳ समाहितम्।
अपा ꣳ रसस्य यो रसस्तं वो गृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वाजुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्।।
इक्षुसारसमुद्भूता शर्करा पुष्टिकारिका।
मलापहारिका दिव्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।
शर्करा श्वेत पावन है बनी शुद्ध ईख के रस से,
इसे स्नानार्थ लाया हूँ करो स्वीकार हे नटवर।
श्रीभगवते साम्बसदा शिवाय नमः। शर्करास्नानं समर्पयामि।
शर्करास्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

जलस्नानम्

ॐ त्रियम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम्।
उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।
ॐ वंरुणस्योत्तम्भनमसिव्वरुणस्य स्कम्भ सर्जनीस्थो वरुणस्य ऋतु सदनमसिव्वरुणस्य ऋण सदनमसि व्वरुणस्यऽऋत सदन मासीद।।

पञ्चामृतस्नानम्

ॐ पञ्चनद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्रोतसः।

सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽ भवत्सरित्।।
पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं पयो दधि घृतं मधु।
शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।
यह पञ्चामृत सुशीतल है बनाया दुग्ध और मधु से।
इसी में घृत भी शामिल है करो स्नान हे शम्भो।।
श्रीभगवते साम्ब सदाशिवाय नमः। पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।।

गंगाजलस्नानम्

गंगा सिन्धु सरस्वती च यमुना गोदावरी नर्मदा।
कावेरी सरयू महेन्द्रतनया चर्मण्वती वेदिका।।
क्षिप्रा वेत्रवती महासुरनदी ख्याता जया गण्डकी।
पूर्णा पूर्णजलैः समुद्रसहिताः कुर्वन्तु नो मङ्गलम्।।

शृंगीजलेन गवयशृंगजलेन वा परिपूर्य स्नापयेत् शतरुद्रीपाठः

ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ नमस्ते रुद्रमन्यवऽ उतोतऽ इषवे नमः बाहुभ्यामुतते नम।।१।। याते रुद्रशिवातनू रघोरापापकाशिनी।। तयानस्तन्वा शन्तमयागिरिशन्ताभिचाकशीहि।।२।। यामिषुङ्गरिशन्तहस्ते विभर्ष्यस्तवे।।३।। शिवाङ्गरित्रताङ्कुरूमाहंऽसी व्युरूषञ्जगत् शिवेन व्वचसा त्वा गिरिशाच्छावदामसि।। यथा न सर्वमिज्जगदयक्ष्म छः सुमनाऽअसत्।।४।। अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्।। अहींश्चसर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्च यातुधान्योऽधराचीः परासुव।।५।। असौ यस्ताम्रोऽअरुणऽ उतवभ्रुः सुमङ्गल।। ये चैन रुद्रा अभितोदिक्षुश्रिताः सहस्त्रशो वैषा हेड़ऽ ईमहे।।६।। असौ योवसर्प्पति नीलग्रीवोव्विलोहितः। उतेनङ्गोपा

अदृश्रनुदहार्य: सदृष्ठोमृडयातिन:।।७।। नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्त्रक्षाय मीढुषे।। अथोये ऽ अस्य सत्वा नोऽहेन्तेऽहेभ्यो करन्नम:।।८।। प्रमुञ्चधन्वनस्त्वमुभयो रात्नोज्जर्याम्।। याञ्चते हस्तऽइषवपराता भगवोव्वप।।९।। विज्जयन्धनु: कपर्दिनो विशल्यो बाणवॉ उत।। अनेशन्नस्यया ऽइषवआभुरस्यनिषङ्गधि:।।१०।। याते हेतिर्म्मीढुष्टमहस्ते बभुवते धनु:।। तयास्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परिभुज।।११।। परिते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणाक्तु विश्वत:।। अथोयइषधिस्त वारेऽअस्मन्निधेहितम्।।१२।। अवतत्य धनुष्ट्व सहस्त्राक्षशतेषुधे।। निशीर्य शल्यानाम्मुखा शिवो न: सुमना भव।।१३।। नमस्त आयुधायानातताय घृष्णवे उभाब्भ्यामुतते नमो बाहुब्भ्यान्तवधन्वने।।१४।। मानो महान्तमुत मानोऽअर्ब्भकम्मानऽउक्षन्तमुतमानऽउक्षितम्।। मानोव्वधी: पितरम्मोतमातरम्मान: प्प्रियास्तन्वो रुद्ररीरिष:।।१५।। मानस्तोके तनये मानआयुषिमानो गोशुमानोऽअश्वेपुरीरिष:।। मानोव्वीरान्रुद्रभामिनो व्वधीर्हविष्मन्त: सदमित्वा हवामहे।।१६।। नमो हिरण्ययबाहवे सेनान्न्ये दिशाञ्चपतये नमो नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्य: पशूनाम्पतये नमो नम: शष्पिञ्जराय त्विषीमिते पथीनाम्पतये नमो नमो हरिकेशायोपतीतिने पुष्टानाम्पतये नमो नमो हरिकेशायोपवीतिने पुष्टानाम्पतये नमो नमो वब्भ्लुशाय।।१७।। (नमोबभ्लुशाय) व्याधिनेऽन्नानाम्पतये नमो नमो भवस्य हेत्यै जगताम्पतये नमो नमो रुद्रायाततायिने क्षेत्राणाम्पतये नमो नम:।। सूतायाहन्त्यै वनानाम्पतये नमो नमो रोहिताय।।१८।। (नमो

रोहिताय) स्थपतये वृक्षाणाम्पतये नमो नमो भुवन्तयेव्वारिवस्कृ-तायौषधीनाम्पतये नमो नमो मन्त्रिणोवाणिजायकक्षाणाम्पतये नमो नमऽ उच्चैर्ग्घोषायाक्रन्द यते पतीनाम्पतये नमो नमः।।१९।। नमः कृत्स्नायतयाधावते सत्व नाम्पतये नमो नमः सहमानायनिव्वयाधिनऽ आव्वयांधिनीनाम्पतये नमो नमो निषङ्गिणे ककुभायस्तनानाम्पतये नमो नमो निचेर वेपरिचराया रणयानाम्पतये नमो (नमो व्वञ्चते)।।२०।। नमोव्वञ्चते परिवञ्चते स्यायूनाम्पतये नमो नमो निषङ्गिणऽषुधिमते तस्कराणाम्पतये नमो .नमः सृकायिब्भ्योजिघा ७ सद्भ्योमुष्णताम्पतये नमो नमोसिसदभ्यो नक्तञ्चरदूभ्यो विकृन्तानाम्पतये नमो नमः।।२१।। नमऽउष्णीषिणे गिरिचराय कुलुञ्चानाम्पतये नमो नमऽइषुमदभ्यो धन्नवायिब्भ्यञ्चवोनमो नमऽ आतन्न्वानेब्भ्य प्रतिदधा नेब्भ्यश्रशृ वो नमोनमऽ आयच्छद्भ्यो स्यद्भ्यञ्चवो नमो (नमो विसृजद्भ्यः)।।२२।। नमो व्विसृजद्भ्यो विध्यद्भ्यश्चवो नमो नमः स्वपद्भ्यो जाग्रद्भ्यश्चवो नमो नमः शयोनेब्भ्यऽआसीनेब्भ्यश्च वो नमो नमस्तिष्ठद्भ्यो धावद्भ्यश्च वो नमो नमः सभाब्भ्य।।२३।। (नमः सभाब्भ्यः) सभापतिब्भ्यश्च वो नमो नमोश्श्वेब्भ्योश्श्वपतिब्भ्यश्वो नमो नम आव्याधिनीब्भ्यो विविध्यन्र्ताब्भ्यश्वो नमो नमऽउगणाब्भ्यस्तृ ऽ उगणाब्भ्यस्तृ हतीम्य श्वोनमो हतीब्भयश्च वो नमो नमो गणेब्भ्यः।।२४।। नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेब्भ्यो गृत्सपतिब्भ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो

विश्वरूपेभ्यश्च वो नमो नमः सेनाभ्यः।।२५।। (नमः सेनाभ्यः) सेनानिभ्यश्च वो नमो नमो रथिभ्यो अरथेब्भ्यश्च वो नमो नमः क्षत्तृब्भ्यः संगृहीतृभ्यश्च वो नमो नमो महद्भ्यो अर्भकेब्भ्यश्च वो नमः नमस्तक्षद्भ्यः।।२६।। (नमस्तक्षद्भ्यो) रथकारेभ्यश्च वो नमो नमः कुलालेभ्यः कर्मरिभ्यश्च वो नमो नमो निषादेभ्य पुञ्जिष्ठेभ्यश्च वो नमो नमः श्वनिब्भ्यो मृगयुब्भ्यश्च वो नमो (नमः श्वभ्यः)।।२७।। नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्चवो नमो नमो भवाय च रुद्राय नमः शर्वाय च पशुपतये च नमो नीलग्रीवाय च शितिकण्ठाय च नमः कपिर्दने।।२८।। (नमः कपर्दिने) चव्वयुप्पतकेशाय च नमः सहस्राक्षाय च शतधन्वने च नमो गिरिशयाय च शिपिविष्टायच नमो मीढुष्टमाय चेषुमते च नमो ह्रस्वाय।।२९।। नमो ह्रस्वाय च वामनाय च नमो बृहते च वर्षीयसे च नमो वृद्धाय च सवृधे च नमोऽग्रयाय च प्रथमाय च नमऽआशवे।।३०।। नमऽआशवे चाजिराय च नमः शीघ्रयाय च शीभ्याय च नमः ऊर्म्म्याय चावस्वन्नयाय च नमो नादेयाय च द्वीप्याय च।।३१।। नमो ज्येष्ठा च कनिष्ठाय च नमः पूर्वजाय चापरजाय च नमो मद्ध्यमाय चाप्रगल्भाय च नमो जघन्याय च बुध्न्याय च नमः सोभ्याय।।३२।। (नमः सोभ्याय) च प्र्रतिसर्याय च नमो याम्याय च क्षेम्याय च नमः श्लोक्याय चावसान्याय च नमऽउर्वर्याय च नमो वन्याय।।३३।। नमोवन्याय च कक्ष्याय च नमः श्रवाय च प्रतिश्श्रवाय च नमऽआशुषेणाय चाशुरथाय च नमः शूराय चावभेदिने च नमो विल्म्मिने।।३४।। (नमो

विल्मिने) च कवचिने च नमो वर्म्मिणे च वरूथिने च नमः श्रुताय च रश्रुतसेनाय च नमो दुन्दभ्याय चा हनन्याय च नमो धृष्णवे॥३५॥ नमो धघृष्णवे च प्रमृशाय च नमो निषङ्गिणे चेषुधिमते च नमस्तीक्ष्णेषवे चायुधिने च नमः स्वायुधाय च सुधन्वने च॥३६॥ नमः स्रुत्याय च पथ्याय च नमः काठ्याय च नीप्याय च नमः कुल्याय च सरस्याय च नमो नादेयाय च व्वैशन्ताय च नमः कूप्याय चावट्टयाय च वैशन्ताय च नमः कूप्याय॥३७॥ नमः कूप्याय चावटाय च नमो वोद्धयाय चातप्याय च नमो मेग्ध्याय च विद्युत्याय च नमो वर्ष्यायचावर्ष्याय च नमो व्वात्याय॥३८॥ नमो वात्याय च रेम्याय च नमो वास्तव्याय च वास्तुपाय च नमः सोमाय च रुद्राय च नमस्ताम्राय चारुणाय च नमः शङ्गवे॥३९॥ नमः शङ्गवे च पशुपतये च नमऽ उग्राय च भीमाय च नमोऽग्ग्रेवधाय च दूरेवधाय च नमो हन्त्रे च हनीयसे च नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यो नमस्ताराय॥४०॥ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च॥४१॥ नमः पार्यायचावार्म्याय च नमः प्रतरणाय चोत्तरणाय च नमस्तीर्थ्याय च कुल्ल्याय च नमः शष्प्याय च फेन्याय च नमः सिकत्याय॥४२॥ नमः सिकत्याय च प्रबाहयाय च नमः किंछशिलाय च क्षयणाय च नमः मर्द्धिनच पुलस्तये च नमऽइरिण्याय त्याय च (नमोब्बज्याय)॥४३॥ नमो व्रज्जयाय च गोष्ठ्याय च नमस्तल्पाय चे गेह्याय च नमो हृदयाय च

निवेष्प्पयाय च नमः काट्टयाय च गह्वरेष्ठाय च नमः शुष्क्याय।।४४।। नम शुष्क्याय च हरित्याय च नम पा सव्वव्याय च रजस्याय च नमो लोप्याय लोलप्याय च नमऽऊर्व्याय च सूर्व्याय च नमः पर्ण्णाय।।४५।। नम पर्ण्णाय च पर्ण्णशदाय च नमऽउद्गुरमाणाय चाभिग्घ्नते च नम आखिदते च प्प्रखिपदते च नमऽइषुकृद्भ्यो धनुष्कृभ्दयश्च वो नमो नमो वः किरिकेभ्यो देवानां ७ हृदयेभ्यो नमो विचिन्नवत्केभ्यो नमो विक्षिणत्केभ्यो नमो नमऽआनिर्हतेभ्यः।।४६।। द्रापेऽ अन्धसस्प्पते दरिद्रनीललोहित। आसाम्प्रजानामेषाम्पशूनाम्मा भेर्म्मारोङ्मोचनः किञ्चनाममत्।।४७।। इमा रुद्राय तवसे कपर्द्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहेमतीः।। यथशमसद्द्विपदे चतुष्पदे व्विश्वम्पुष्टङ्ग्रामेऽअस्मिन्ननातुरम्।।४८।। या ते रुद्र शिवातनू शिवाव्विश्वाहाभेषजी शिवारुतस्य भेषजी तया नो मृड़जीवसे।।४९।। परिनोरुद्रस्य हेर्तिवृणक्तु परित्वेषस्य दुर्मतिरधायोः। अवस्थिरामघवदभ्पस्तनूष्ष्वमीढ्वस्तोकाय तनयायमृड।।५०।।

मीढुष्टमशिवतमशिवो न सुमनाभवपरमेब्बूक्षऽआयुधन्निधाय कृत्तिंब्वसान आचर पिनाकंम्बिवभ्रदागहि।।५१।। व्विकिरिद्रविलोहितनमस्ते अस्तु भगवतः यास्तेसहस्त्रहेतयो न्यमस्मिन्निवपन्तुताः।।५२।। सहस्त्रत्राणि सहस्त्रशो वाह्वस्तवहेतयः तासीमीशानोभगवः पराचीनामुखाकृधि।।५३।। असंख्याता सहस्त्राणि ये रुद्राऽअधिभूम्याम् तेषां ७ सहस्त्रयोजने वधन्वानितन्नमसि।।५४।। अस्मिन्महत्यर्णवेन्तरिक्षेभवा अधि तेषां

ॐ सहस्त्रयोजनेवधन्वानि तन्मसि।।५५।। नीलग्ग्रीवा: शितिकण्ठादिवॐ रुद्राउपश्रिता:।। तेषां ॐ सहस्त्रयोजनेवधन्वानि तन्मसि।।५६।। नीलग्रीवा: शितिकण्ठा: शर्वा अध: क्षमाचरा: तेषां ॐ सहस्त्रयोजनेवधन्वानि तन्मसि।।५७।। ये वृक्षेषु शाष्पिञ्जरा नीलग्रीवा विलोहिता:।। तेषां ॐ सहस्त्रयोजनेबधन्न्वानि तन्मसि।।५८।। ये भूतानामधिपतयोव्विशिखास: कपर्दिन:। तेषां ॐ सहस्त्रयोजनेवधन्वानितन्मसि।।५९।। येपथाम्पथि रक्षयं ऽ ऐलवृदा आयुर्युध तेषां ॐ सहस्त्रयोजनेवधन्वानि तन्मसि।।६०।। ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिण: तेषांॐ सहस्त्रयोजनेवधन्न्वानितन्मसि।।६१।। यन्नेषु व्विविद्धयन्तिपात्रेषुपिबतोजनान्। तेषां सहस्त्रयोजने ऽ बधन्नवा नितन्मसि।।६२।। व एतावन्तश्चभूयांॐसश्चदिशो रुद्रावितस्थिरे। तेषां ॐ सहस्त्रयोजनेवधन्वानितन्मसि।।६३।। नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये दिवि येषांवर्षमिषव: तेभ्यो दशप्राचीर्दशदक्षिणा दशप्प्रतीचीर्द्धशोदी चीर्द शोर्ध्वा:। तेभ्यो नमो अस्तु ते नोवन्तुतेनोंमृत्ङयन्तुतेयन्द्विष्मोयश्चनोद्वेष्टितमे षाञ्चम्भेदघ्म:।।६४।। नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो येन्तरिक्षये ये षांव्वातऽ इषव:। तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोशोर्ध्वा:। तेभ्यो नमोऽअस्तु तेनो वन्तुतेनोमृङयन्तु तेयन्द्विष्मोयश्चनोद्वेष्टितमे षाञ्चम्भेदघ्म:।।६५।। नमोऽस्तु रुर्द्रेभ्यो ये पृथिव्या येषां मन्नमिषव:। तेभ्योदश प्राचीर्दशर्दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वा:।। तेभ्यो नमोऽअस्तु ते नो वन्तु ते नो मृङयन्तुते यंव्द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि

तमेषाञ्जम्भेदध्मः॥६६॥ ॐ नमस्ते रुद्रमन्यवऽउतोतऽइषवे नमः वाहुभ्यामुत ते नमः॥६७॥ या ते रुद्र शिवा तनू रघोरा पापकाशनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि॥६८॥ यामिषुङ्गरिशन्तहस्तेविभर्ष्यस्तवे। शिवाङ्गिरित्रतांकुरुमाहि ꣳसीः पुरुषञ्जगत्॥६९॥ शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छावदामसि। यथा नः सर्व्वमिज्जगदयक्ष्म ꣳ सुमनाऽअसत्॥७०॥ अध्यवोचदधिवक्ताप्रथमोदैव्योभिषक्। अहींश्चसर्व्वाञ्जयन्त्सर्व्वांश्च यातुधान्यो धराचीः परासुव॥७१॥ असौयस्ताम्रो अरुण उतवभ्रुः सुमङ्गलः ये चैन ꣳ रुद्राऽअभितो दिक्षु श्रिताः। सहस्रशो वैषा ꣳ हेडऽईमहे॥७२॥ असौ योवसर्प्पतिनीलग्रीवो विलोहितः। उतैनङ्गोपाऽअदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्यः सदृष्ठोमृडयातिनः॥७३॥ नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे। अथोयेऽअस्यसत्वानो हन्तेभ्योकरन्नमः॥७४॥ पमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरात्र्योर्ज्ज्याम्॥ याश्च ते हस्तऽइषवः परा ता भगवोव्वप॥७५॥ विज्ज्यन्धनुः कपिर्दनव्विशल्ल्योबाणवाँऽउत अनेशन्नस्ययाऽइषवऽआभुरस्यनिषङ्गधिः॥७६॥ या ते हेतिर्म्मीढुष्टमहस्ते बभूव ते धनुः तयास्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मयापरिभुज॥७७॥ परिते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणकुव्विश्वतः। अथो यऽइषुधिस्त वारेऽअस्मन्निधेहितम्॥७८॥ अवतत्यधनुष्ट्‌ व ꣳ सहस्राक्षशतेषुधे। निशीर्येशल्ल्यानाम्मुखाशिवो नः सुमना भव॥७९॥ नमस्तुऽआयुधायानातताय घृष्णवेभाभ्यामुत ते नमो वाहुभ्यान्तव

धन्वने।।८०।। मानो महान्त मुतमानोऽअर्ब्भकम्मानउक्षन्तमुतमानऽउक्षितम्।। मानोवधीः पितरम्मोतमातरं मानः प्रियास्तन्वो रुद्ररीरिषः।।८१।। मानस्तोके तनये मानऽआंयुषिमानोगोषुमानो अश्वेषुरीरिषः।।८२।। ॐ वय ७ सोमव्व ते तव मनस्तनुषुविभ्रतः प्रजावन्तः सचेमहि।।८३।। एष तेरुद्रभागः सहस्वस्त्राम्बिकयातञ्जषस्वस्वाहैषतेरुद्रभागऽ आखुस्ते पशुः।।८४।। अवरुद्र मदीमह्यवदेवं त्र्यम्बकम्।। यथा नोव्वस्यसस्करद्यथा नः श्रेयस्करद्यथा नोव्वयवसाययात्।।८५।। भेषजमसि भेषज ङ्गवेश्ववाय पुरुषाय भेषजम्।। सुखम्मेषायमेष्यै।।८६।। त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुटिष्टवर्द्धनम्।। उर्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्।। त्र्यम्बकंयजामहे सुगन्धिम्पतिवेदनम्।। उर्व्वारुकमिवबन्धनादितोमुक्षीयमामुतः।।८७।। एतत्ते रुद्रा वसन्तेन परोमूजवतोतीहि।। अवततधन्वा पिनाकावसः।। कृत्तिवासाऽअहि ७ सन्नः शिवोतीहि।।८८।। त्र्यायुषञ्जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायूषम्।। यद्देवेषु त्र्यायुषन्तन्नोऽअस्तुत्र्यायुषम्।।८९।। शिवो नामासि स्वधितिस्ते पिता नमस्तेऽअस्तुमामाहि ७ सीः।। निवर्त्तयाम्म्यायुषेन्नाद्यायप्रजननायरायस्पोषायसुप्रजास्त्वायसुव्वीर्याय।।९०।। एषते रुद्रभागः। सहस्वस्त्राम्बिकयातञ्जुषस्वस्वाहैषतेरुद्रभागऽ आखुस्ते पशुः।।९१।। अवरुद्रमदीमह्मवदेवन्त्र्यम्बकम्।। यथा नो व्यस्यसस्करद्य थानः श्रेयसस्करद्यथा नो व्वयवसाययात्।।९२।। ॐ नमस्ते रुद्र मन्यवऽउतोतऽ इषवे नमः वाहुभ्यामुतते नमः।।९३।। या ते रुद्र शिवा तनूरधोराथपापकाशिनी तया

नस्तन्वाशन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि।।९४।। नतंविदाथय इमा जजानान्यद्युष्भाकमन्त ख बभूव।। नीहारेण प्रावृता जल्प्या जसुतृपऽउक्थशासश्चरन्ति।।९५।। विश्वकर्मा ह्याजनिष्ठदेवऽआदिद्गम्धर्वोऽअभवद् द्वितीयः तृतीयः पिता जनितोषधीनामपांगर्भव्य दधात्पुरुत्रा।।९६।। मीढुष्टमशिवतमशिंवो नः सुमना भव परमेत्रृक्षऽआयु धन्निधायकृत्तिवंसान आचर पिनाकम्बिभ्रदागहि।।९७।। विकिरि विलोहित नमस्तेऽ अस्तु भगवः यास्तेसहस्त्रहेतयोऽन्यमस्मन्निववन्तु ताः।।९८।।

सहस्राणि सुहस्रशोवाह्वोस्तव हेतयः तासामीशा नो भगवः पराचीनामुखाकृधि।।९९।।

असंख्यायातासहस्राणि ये रुद्राऽ अधिभूम्याम्।। तेषां ७ सहस्रायोजनेवधन्नवा नितन्मसि।।१००।।

ॐ स्वस्ति नऽ इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषा विश्ववेदाः स्वस्ति नस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।।१०१।।

पयः पृथिव्याम्पयऽ ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ।।१०२।।

विष्णोरराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि। वैष्णवमसि विष्णवे त्वा।।१०३।।

ॐ अग्निर्देवतृा व्वातो देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता व्वसवो देवता रुद्रा देवतादित्या देवता मरुतो देवता विश्वेदेवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता।।१०४।।

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ७ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्ति-

रोषधयः शान्तिः वनस्पतयः शान्तिविश्वेदेवा शान्तिर्ब्रह्माशान्तिः सर्वꣳ शान्ति शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि॥१०५॥

चौपाइयाँ

याचिये गिरिजापति कासी, जासु भवन अणिमादिक दासी।
अवढर दानी द्रवत पुनि थोरे, देखि न सकल दीनिं करजोरे॥

गये शरण आरत के लीन्हे, निरखि निहाल निमिष महँ कीन्हे।
मति की रति गति भूति भलाई, सकल सुलभ शंकर सेवकाई॥

तुलसीदास याचक गुण गावे, विमल भक्ति रघुपतिकी पावे।
विनुछल विश्वनाथ पद नेहू, राम भगत कर लच्छन एहू॥

जपहुँ जाइ शंकर सत नामा, हौंइहि ह्रदय तुरत विश्रामा।
विश्वनाथ मम नाथ पुरारी, त्रिभुवन महिमा विदित तुम्हारी॥

शंकर जगत बन्धु, जगदीसा, सुर नर मुनि सब नावत सीसा।
शिव समान प्रिय मोहिं न दूजा, लिंग थापि विधिवत कर पूजा॥

जे रामेश्वर दरसनु करहहिं, ते तनु तज मम धाम सिधरहिं।
जे गंगाजल आन चढ़ावहिं, ते सायुज्य मुक्ति नर पावहिं।

शिवद्रोही मम दास कहावा, सो नर मौंहि सपनेहुँ नहीं भावा॥
शिव पद कमल जिन्हहिं रति नाहीं, रामहिं ते सपनेहुँ न सोहाहीं॥

गुरु पितु मात महेश भवानी, प्रनवऊँ दीनबन्धु दिन दानी।
मोरे तुम प्रभु गुरु पितु माता, जाऊँ कहाँ तज पद जल जाता॥

नाथ आज मोहि कहा न पावा, मिटेहिंदोष दुःख दारिद दावा।

सुमिरि महेशहिं करुहुँ निहोरी, विनती सुनहुँ सदा शिव मोरी।।

आशुतोष तुम अवढर दानी, आरति हरहु दीन जन जानी
दीन दयाल विरद सम भारी, हरहु नाथ मम संकट भारी।।

मंगल भवन अमंगल हारी, उमा सहित जेहि जपत पुरारी।
सुखी मीन जहाँ नीर अगाधा, जिमि हरि शरण न एकहु बाधा।।

महाराज अब कीजै सोई, सब कर धर्म सहित हित होई।
इच्छित फल बिनु शिव अवराधै लहैं न कोटि जोग जप साधे।।

सेवक स्वामी सखा सिय पी के, हित निरुपधि सब विधि तुलसी के।
जगदातमा महेसु पुरारी, जगत जनक सबके हितकारी।।

देख नाथ पद कमल तुम्हारे, अब पूरे सब काम हमारे।
शंकर विमुख भगति चह मोरी, सो नर की मूढ़ मति थोरी।।

वस्त्रम्

ॐ युवा सुवासः परिवीतऽ आगात्। सऽ उ श्रेयान भवति जायमानः। तन्धीरासः कवयऽ उन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः।।
विचित्रवस्त्राणि सुवासितानि सुवर्णसूत्रैः परिनिर्मितानि।
मृदूनि मृत्युञ्जय संगृहाण नमः शिवायेति समर्पयामि।।
शीतवातोष्णसन्त्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।
देहालङ्करणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।
ये दोनों वस्त्र कोमल हैं सुहावन हैं मनोहर हैं।
चढ़ाने आज लाया हूँ करो स्वीकार हे शंकर।।
श्रीभगवते साम्बसदा शिवायः नमः। वस्त्रं समर्पयामि। वस्त्रान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतम्

यज्ञोपवतीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।
नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर।।
है नवधा तन्तु से गृन्थित सुशोभन सूत्र यज्ञों का।
धवल उपवीत लाया हूँ इसे धारण करो शंकर।।
श्री भगवते साम्ब सदा शिवाय नमः। यज्ञोपवीतं समर्पयामि।
यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं जलम् समर्पयामि।।

उत्तरीयवस्त्रम्

सुवर्णवर्णैर्घटितं मनोरमं सूत्रैर्नवैः संग्रथितं महार्हम्।
वस्त्रोत्तरीयं परमं पवित्रं नमः शिवायेति समर्पयामि।।
श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः। उत्तरीयं वस्त्रं समर्पयामि।
उत्तरीयान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

विभूतिधारणम्

ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम्।
यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नोऽस्तु त्र्यायुषम्।।
सर्वपापहरम् भस्म दिव्यज्योतिसमप्रभम्।
सर्वक्षेमकरं पुण्यं गृहाण परमेश्वर।।
यह पावन हवि से निर्मित है विभूति भूति की दाता।
चढ़ाने तुमको लाया हूँ इसे धारण करो शम्भो।।
श्रीभगवते साम्बसदा शिवाय नमः. भस्म समर्पयामि।।

चन्दनम्

ॐ अ ७ शुनाते अ ७ शुः पृच्यतां परुषा परुः।
गन्धस्ते सोमवतु मदाय रसा अच्युतः।।
उशीरकाश्मीरसिताभ्रपद्मश्रीखण्डमंदारहिमाम्बुयुक्तम्।
गृहाण मृत्युञ्जय गंधमुत्तमं नमः शिवायेति समर्पयामि।।
श्रीखण्ड चन्दनं दिव्यं गन्धाढयं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ पूजनं प्रतिगृह्यताम्।।
ये मलयाचल समुत्पन्ना सुशीतल निधि विलेपन की।
चढ़ाने आज लाया हूँ करो स्वीकार हे भगवन्।।
पञ्च वक्त्रेषु पूजनम्।।
ॐ तत्पुरुषाय नमः। ॐ अघोराय नमः। ॐ सद्योजाताय नमः।
ॐ वामदेवाय नमः। ॐ ईशानाय नमः।। पञ्चवक्त्रेषु पूजनम्।।

अंगपूजा

ॐ भवाय नमः पादौ पूजयामि।। ॐ भवनाशाय नमः जानुनीं पूजयामि ।।२।। ॐ शूलपाणये नमः गुल्फौ पूजयामि ।।३।। ॐ शम्भवे नमः कटिं पूजयामि ।।४।। ॐ स्वयम्भुवे नमः गुह्यं पूजयामि ।।५।। ॐ महादेवाय नमः नाभिं पूजयामि ।।६।। ॐ विश्वकर्त्रे नमः उदरं पूजयामि ।।७।। ॐ सर्वतोमुखाय पार्श्वौ पूजयामि ।।८।। ॐ स्थाणवे नमः स्तनौ पूजयामि ।।९।। ॐ नीलकण्ठाय नमः कण्ठं पूजयामि ।।१०।। ॐ श्रीकंठाय नमः मुखं पूजयामि ।।११।। ॐ शशिभूषणाय नमः मुकुटं पूजयामि ।।१२।। ॐ देवाधिदेवाय नमः सर्वाङ्गं पूजयामि।।१३।।

गणपूजा

ॐ गणपतये नमः ।।१।। ॐ कार्तिकाय नमः ।।२।। ॐ पुष्पदन्ताय नमः ।।३।। ॐ कपर्दिने नमः ।।४।। ॐ भैरवाय नमः ।।५।। ॐ शूलपाणये नमः ।।६।। ॐ ईश्वराय नमः ।।७।। ॐ दण्डपाणये नमः ।।८।। ॐ नन्दिने नमः ।।९।। ॐ महाकालाय नमः ।।१०।।

अष्टमूर्तिपूजा

ॐ भवाय क्षितिमूर्तये नमः ।।१।। ॐ शर्वाय जलमूर्तये नमः ।।२।। ॐ रुद्राय अग्निमूर्तये नमः ।।३।। ॐ उग्राय वायु मूर्तये नमः ।।४।। ॐ भीमाय आकाशमूर्तये नमः ।।५।। ॐ पशुपतये यजमानमूर्तये नमः ।।६।। ॐ महादेवाय सोममूर्तये नमः ।।७।। ॐ ईशानाय सूर्यमूर्तये नमः ।।८।।

एकादश रुद्र पूजा

ॐ अघोराय नमः ।।१।। ॐ पशुपतये नमः ।।२।। ॐ शर्वाय नमः ।।३।। ॐ विरूपाक्षाय नमः ।।४।। ॐ विश्वरूपिणे नमः ।।५।। ॐ त्र्यम्बकाय नमः ।।६।। ॐ कपर्दिने नमः ।।७।। ॐ भैरवाय नमः ।।८।। ॐ शूलपाणये नमः ।।९।। ॐ ईशानाय नमः ।।१०।। ॐ महेश्वराय नमः ।।११।।

गौर्यार्चनम्

पार्वतीपूजन – (विशेष सामग्री :– रेशमी साड़ी एवं रेशमी उपवस्त्र तथा सुहाग पिटारी अर्पित करें।)

हरिद्राकुंकुमं चैव सिन्दूरेण समन्वितम्।
कज्जलं कण्ठसूत्राणि सौभाग्यद्रव्यमुच्यते।।

सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्द्धनम्।
शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।।

देवीवन्दना

मुखे ते ताम्बूलं नयनयुगले कज्जलकला
ललाटे काश्मीरं विलसति गले मौक्तिकलता।।
स्फुत्काञ्चीशाटी पृथुकटितटे हाटकमयी।
भजामस्त्वां गौरी नगपतिकिशोरीमविरतम्।।
देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद, प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं, त्वमोंश्वरी देवि चराचरस्य।।

भजन

तुम्ही हो दयामयि दया करने वाली,
अतुल स्वर्ग सुख भूमि में भरने वाली।
तुम्हें छोड़कर ध्यान किसका करें माँ,
तुम्हीं तो हो माता कृपा करने वाली।
जगत में है हमको तुम्हारा सहारा,
महादेवि मंगल सदा करने वाली
हमारे सभी कष्ट हरलो दया कर,
तुम्ही तो हो माता विपत्ति हरने वाली।
यही दास सेवक विनय माँ से करता,
कृपा अब करो माँ कृपा करने वाली।
दुर्गे दुर्गति नाशिनी जय जय,
कालविनाशनी काली जय जय।
उमा रमा ब्रह्माणी जय जय, राधा सीता रुक्मणि जय जय।

जय माँ दुर्गे जय माँ तारा, जय गणेश जय शुभ आधारा।
देविपूज्यपदकमल तिहारे, सुर नर मुनि सब होय सुखारे।।
जय जय जय जगदम्ब भवानी, कृपा करो हमपर महारानी।।
जगदम्बे माता की जाय, साँचे दरबार की जय।।

चौपाइयाँ

जय जय गिरिवर राज किसोरी, जय महेश मुखचन्द्चकोरी।
जय गजबदन षडानन माता, जगत जननि दामिनी दुति गाता।।
नहिं तव आदि मध्य अवसाना, अमित प्रभाव वेदु नहिं जाना।
भवअरुविभव पराभव कारिनि, बिस्वविमोहनि स्ववस विहारिनि।।
सेवत तोहि सुलभ फलचारी, वरदायिनी पुरारि पिआरी।
देवी पूजि पद कमल तुम्हारे, सुर नर मुनि सब होहिं सुखारे।
मोर मनोरथु जानहु जानहु नीके, बसहु सदा उर पुर सबही के।
कीन्हेऊँ प्रगट न कारन तेहीं, अस कहि चरन गहे बैदेही।।
विनय प्रेम बस भईं भवानी, खसी माल मूरत मुसुकानी।
सादर सियँ प्रसादु सिर धरेऊ, बोली गौरी हरषु हियँ भरेऊ।।
सुन सियँ सत्य असीस हमारी, पूजहि मन कामना तुम्हारी।
नारद बचन सदा सुचि साचा, सो बरु मिलिहि जाहि मनु राचा।।
मन जाहि राचेऊ मिलहि सो वर सहज सुन्दर सांवरो।
करुना निधान सुजान सीलु सनेहु जानत रावरो.
एहि भाँति गौरि असीस सुनि सिय सहित हियँ हरषीं अली।
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि मुदित मन मन्दिर चली।।

पार्वतीअंगपूजनम्

१. ॐ शिवायै नमः पादौ पूजयामि। २. ॐ शंकरप्रियायै नमः जानुनि पूजयामि। ३. ॐ पार्वत्यै नमः गुल्फौ पूजयामि। ४. ॐ गौर्य्यै नमः कटिं पूजयामि। ५. ॐ विश्वपालिन्यै नमः गुह्यं पूजयामि। ६. ॐ कोटिदिव्यै नमः नाभिं पूजयामि। ७. ॐ विद्यामात्रे नमः उदरं पूजयामि। ८. ॐ विद्यतारिण्यै नमः पाणयोः पूजयामि। ९. ॐ जगज्जनन्यै नमः स्तनौ पूजयामि। १०. ॐ दारिद्रयभञ्जन्यै नमः कण्ठं पूजयामि। ११. ॐ धनदात्र्यै नमः मुखं पूजयामि। १२. सर्वकार्यसिद्धयै नमः नेत्रे पूजयामि। १३. ॐ विद्यकर्त्र्यै नमः भृकुटिं पूजयामि। १४. ॐ राजलक्ष्म्यै नमः शिरः पूजयामि। १५. ॐ भक्तवासिन्यै नमः मुकुटं पूजयामि। १६. ॐ अन्नपूर्णायै नमः सर्वाङ्गं पूजयामि।।

अक्षतम्

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रियाऽ अधूषत।
अस्तोषत स्वभानवो व्विप्रा नविष्ठ ठया मती योजान्विन्द्रते हरी।।
अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर।।
ये अक्षत लीजिये स्वामी श्वेत हैं सुहावन हैं।
समर्पित करने लाया हूँ करो स्वीकार हे शंकर।।
श्री भगवते साम्ब सदा शिवाय नमः। अक्षतान् समर्पयामि।।

तिलार्पणम्

अचिकित्स्याश्च य रोगा ये च रोगा निरौषधाः।।
तेषां समूलनाशाय तिलमीशानमर्पये।।

यः कृष्णैश्च तिलैः सम्यक् लिंगं कृत्वाऽर्चयेन्नरः।
सर्वपापविनिर्मुक्तो याति माहेश्वरं पदम्।।

ॐ शुभ्रान्‌शरच्चन्द्रमरीचसंनिभानखण्डितान् कृष्णतिलैः समन्वितान्।
गृहाण मृत्युञ्जय धूर्जटेऽक्षतान् नमः शिवायेति समर्पयामि।।

करूँ अर्पण तिलों को भी सदा आरोग्यवर्द्धक हैं।
चढ़ाने आज लाया हूँ इन्हें धारण करो शंकर।।

यवाः (जौ)

ॐ यवोसियवस्मद्वैषो यवयारातीः।।

तुम्हें हैं विष्णु अति प्यारे यह न्यारे विष्णु वारे हैं।
यवाक्षत् आज लाया हूँ इन्हें धारण करो शंकर।।

पुष्पम्

ॐ ओषधीः प्रतिमोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।
अश्वाऽइव सजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्णवः।।

वृक्षस्य मूले परमो रसो यः स एव शाखाग्रगतः क्रमेण।
वभूव पुष्पं मनसः स्वरूपं नानाविधं त्र्यम्बक तेऽर्पयामि।।

सेवन्तिका वकुलचम्पकपाटलाब्जेः पुन्नागजातिकरवीररसालपुष्पैः।
विल्वप्रवालतुलसीदलमालतीभिः त्वां पूजयामि जगदीश्वर मे प्रसीद।।

सुकोमल पुष्प सुरभित हैं कमल चम्पा व बेला के
चढ़ाने आज लाया हूँ करो स्वीकार हे शंकर।

विल्वाष्टकम् –

त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रयायुधम्।
त्रिजन्मपापसंहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।१।।

त्रिशाखैर्बिल्वपत्रैश्च ह्यच्छिद्रैः कोमलैः शुभैः।
शिवपूजां करिष्यामि बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥२॥
अखण्ड बिल्वपत्रैश्च पूजिते चन्द्रशेखरे।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥३॥
शालिग्रामशिलालिङ्गे यः करोति शिवार्चनम्।
सोमयागसमं पुण्यं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥४॥
दन्तिदानसहस्राणि वाजपेयशतानि च।
गौरीकन्यामहादानं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥५॥
लक्ष्मीकरं लक्ष्मीधनं महादेवस्य च प्रियम्।
बिल्वपत्रं प्रयच्छामि बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥६॥
दर्शनं बिल्ववृक्षस्य स्पर्शनं पापनाशनम्।
अघोरपापसंहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥७॥
मूलतो ब्रह्मरूपाय मध्यतो विष्णुरूपिणे।
अग्रतः शिवरूपाय बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥८॥
तुलसीबिल्वनिर्गुण्डी जम्बीरः मलयोस्तथा।
बिल्वपत्रसमं पत्रं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥९॥
उमया सह देवेश नन्दिवाहनसंस्थितम्।
शिवपूजां करिष्यामि बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥१०॥
बिल्वाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ।
सर्वपापविनिर्मुक्तः शिवलोकमवाप्नुयात् ॥११॥
श्री बिल्वपत्रैः तुलसी दलैर्वा मन्दारजाती करवीर पुष्पैः।
प्रसीद विश्वेश्वर पूज्यामि नमः शिवायेति निवेदयामि॥
(इति श्रीबिल्वाष्टकं सम्पूर्णम्)

शिवोपासनामन्दार पुष्प (अकौआ)

मन्दारमालाकुलितालिकायै कपालमालाङ्कितशेखराय।
दिव्याम्बरायै च दिगम्बराय नमः शिवायै च नमः शिवाय।।
मन्दार माला जगदम्बिका को कपाल माला शिव को सुहाये।
दिव्याम्बरों में है माँ भवानी शिव को करते नमः शिवाय।।

शमीपत्र

अमंगलानां शमनीं शमनीं दुष्कृतस्य च।
दुःस्वप्ननाशिनीं धन्यां प्रपद्येऽहं शमीं शुभाम्।।
शमी शमयते पापं शमी शत्रुविनाशिनी।
अर्जुनस्य धनुर्धारिरामस्य प्रियवादिनी।।
शमी दुःस्वप्न हरती हो-शमी पुण्यों की ग्रन्थि है।
शमी सम्मानदात्री है शिवार्पण आज करता हूँ।।

दूर्वा

काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।
एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च।।
दूर्वाङ्कुरान् सुहरितानमृतान् मङ्गलप्रदान्।
आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण परमेश्वर।।
हे दूर्वे शुभ प्रदात्री हो तुम्हीं पीयूष जन्मा हो।
लखाते गुण सभी तुममें शिवार्पण आज करता हूँ।।

तुलसीपत्रम्

तुलसीहेमरूपां च रत्नरूपां च मञ्जरीम्।
भवमोक्षप्रदां तुभ्यं समर्पयामि हरिप्रियाम्।।

प्रदात्री मोक्ष की वृन्दा बनी ये हेममय तुलसी।
समर्पण करने लाया हूँ करो स्वीकार हे शंकर।।
ये मञ्जरियाँ सुहाती हैं तुम्हें रत्नों से अति प्यारी।
इन्हें स्वीकार कर जन का करो उद्धार हे शंकर।।

धूपम्

ॐ धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्वं तयोऽस्मान्धूर्वतितं
धूर्व यं वयं धूर्वामः देवानामसिवह्नितम
सस्नितम्पप्रितमं जुष्टतमन्देवहूतमम्।।
मध्वाज्यकर्पूरलवंगचन्दनैः समन्वितं चागुरुगुग्गुलूभ्याम्।
गृहाण धूपं मृगनाभिसंयुतं नमः शिवायेति समर्पयामि।।
दशाङ्ग गुग्गुलं धूपं चन्दनागुरुसंयुतम्।
समर्पितं मया भक्त्या महादेव प्रगृह्यताम्।।
वनस्पति के दशाङ्गों से बनाकर धूप लाया हूँ।
मनोहर गन्ध है इसमें करो स्वीकार हे शंकर।।

दीपं

ॐ अग्नि ज्योंतिज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः
सूर्यः स्वाहा अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्यो वर्चो
ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा।।
ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्योऽ अजायत।
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।।
अखण्डरूपं सितवर्तिसंयुतं तमोपहं गव्यघृतेन संयुतम्।
दीपं प्रदास्यामि सुरेश तुभ्यं नमः शिवायेति समर्पयामि।।
दीपं दर्शयामि।।

ज्वलित दीपों की अबली से सजाकर दीप लाया हूँ।
दिखाने दीप लाया हूँ करो स्वीकार हे शंकर।।
भगवते श्रीसाम्बशिवाय नमः दीपं दर्शयामि।

नैवेद्यम्

ॐ अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः।
प्रप्रदातारं तारिषऽ उर्ज्जन्नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे।।
अवतत्य धनुष्ट्व ꣳ सहस्राक्ष शतेषुधे। निशीर्य
शल्यानाम्मुखा शिवो नः सुमना भव।।
ॐ स्वादिष्ठया मदिष्ठया पवस्व सोमधारया।
इन्द्राय पातवे सु नः।
नाभ्याऽआसीदन्तरिक्ष ꣳ शीर्ष्णोद्यौः समवर्त्तत
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रातथा लोकाँ २ अकल्पयन्।।
शर्कराघृतसंयुक्तं मधुरं स्वादु चोत्तमम्।
भक्ष्यभोज्यसमायुक्तं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।
सुसंस्कृतान्नं सघृतं पयोयुतं सशर्कर हाटकपात्रसंयुतम्।
नैवेद्यमेतत्प्रगृहाण शम्भो नमः शिवायेति समर्पयामि।।

ग्रासमुद्राप्रदर्शनम्

अँगूठा तथा तर्जनी मिलाकर दिखावे –

ॐ प्राणाय स्वाहा। (अँगुष्ठ तर्जनी)
ॐ अपानाय स्वाहा।। (अँगुष्ठ मध्यमा)।।
ॐ व्यानाय स्वाहा।। (अँगुष्ठ अनामिका)
ॐ उदानाय स्वाहा।। (अँगुष्ठ कनिष्ठिका)

ॐ समानाय स्वाहा ।। (अँगुष्ठ एवं सभी अँगुलियाँ मिलाकर)
बना नैवेद्य उत्तम जो मधुर रस घृत से निर्मित है।
निवेदन आज करता हूँ करो स्वीकार हे शंकर।
मलाई के मोदक बना कर थाल लाया हूँ।।
महानैवेद्य लाया हूँ करो स्वीकार हे शंकर।

गंगाजलम् (आचमन)

गंगाजलं सर्वगुणैर्युतं विभो विषावङ्घ्रि जातं हिमवालुकान्वितम्
स्थितं पवित्रं कलधौतपात्रे गृहाण पानीयमिदं सुशीतलम्।।
ये जल निर्मल सुगन्धित है लवंग पूंग एला से।
इसे प्राशन को लाया हूँ करो स्वीकार हे शंकर।।

विजया

ॐ विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो वाण२वाउत। अनेशन्नस्याऽ इषवऽ आभुरस्य निषंगधिः।

प्रियालवीजानि जयान्वितानि मरीचवातादसितायुतानि।
गृहाण योगेश्वर योगसिध्यै नमः शिवायेति समर्पयामि।।
शिवप्रीतिकरं रम्यं दिव्यभावसमन्वितम्।
विजयाख्यं च पानार्थं भक्त्या दत्तं प्रगृह्यताम्।।
तुम्हारी याद में शिवजी मैं पूजा करने आया हूँ।
यह गंगाजल हरिद्वारी चढ़ाने शिव को लाया हूँ।।
यह चन्दन लीजिये स्वामी यह अक्षत लीजिये शंकर।
राम का नाम लिख लिखकर बेलपत्री भी लाया हूँ।।
धतूरा भी मैं लाया हूँ पुष्प माला गले पहनो।

थाल दीपक सजा करके धूप देने को आया हूँ।
यह विजया घोट कर लाया इसे धारण करो शंकर।
यह दाता ज्ञान की बूटी चढ़ाने शिव को लाया हूँ।।
यही इच्छा है शंकर जी कि भक्ति आप में होवे।
यही प्रसाद काफी है यह विनती करने आया हूँ।।
दुखों का भार है सिर पर जो तारोगे तो क्या होगा।
अगम भव सिंधु में नईया उबारोगे तो क्या होगा।
किनारा दीखता नहीं न बुध बल्ली पहुँचती है।
है मन मल्लाह मतवाला निहारोगे तो क्या होगा।।
सभी का आसरा तजकर पुकारा आपको शंकर।
आ रहा हूँ न घबड़ाओ पुकारोगे तो क्या होगा।।

शिव के गणों को प्रसादी निवेदन

वाण रावण चण्डीशनन्दिभृंगिरिटिः वृषः।
सदाशिवप्रसादोयं सर्वेगृह्णन्तु शाम्भवाः।।
दुर्वास कौशिक मृकण्ड विरञ्चि सूनोः।
देवेन्द्र वाण हरि भक्ति दधीचि रामः।।
काण्वं च भार्गव बृहस्पति गौतमाद्यान्
एतान् वयं परम पाशुतान्नमामः।।

पञ्चमेवा

ॐ पञ्चनद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्रोतसः।
सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽ भवत्सरित।।
पञ्चमेवाः भगवते साम्ब शिवाय समर्पयामि।

धतूरा फल

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्म्मुक्षीय मामृतात्॥
धीरधैर्यपरीक्षार्थं धारितं परमेष्ठिना।
धत्तूरं कण्टकाकीर्णं गृहाण परमेश्वर॥
श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः धत्तूरफलं समर्पयामि।
कनक चढ़ाये देत कनक निकेत हैं।

ऋतुफल

ॐ याः फलिनीर्य्याऽ अफलाऽ अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व ꣳ हसः॥
इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव
तेन मे सफलावाप्ति र्भवेज्जन्मनि जन्मनि।
अनेन फल दानेन फलदोऽस्तु सदा मम।
फलों का स्वाद भी चाखो रसीले हैं मधुरे हैं।
निवेदन आज करता हूँ करो स्वीकार हे शंकर॥
भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः। ऋतुफलानि समर्पयामि

ताम्बूलपूंगीफलसमर्पणम्

पूंगीफलं महदिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्।
एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥
पूंगीफलादिसहितं कर्पूरेण च संयुतम्।
ताम्बूलं कोमलं दिव्यं गृहाण परमेश्वर॥
किये उपचार सब अर्पण प्रभो ताम्बूल लाया हूँ।

यह षडरस स्वादवर्द्धक है करो स्वीकार हे शंकर।।
भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः। ताम्बूलं पुंगीफलं च समर्पयामि।

सुगन्धित द्रव्य (इत्र)

ॐ अहिरिव भोगैः पर्य्येति बाहुञ्जाया हेतिम् परिवाधमानः।
हस्तघ्नो विश्वाव्वयुनानि विद्वान्पुमान्पुमा ꣳ सम्परिपातु विश्वतः।
मिलाकर गन्ध कस्तूरी सुगन्धित द्रव्य लाया हूँ।
यह पावन द्रव्य लाया हूँ इसे धारण करो शंकर।।
भगवते श्री साम्ब सदा शिवाय नमः सुगन्धित द्रव्यं समर्पयामि।

आभूषण

ॐ युवं तमिन्द्रापर्व्वता पुरोयुधा योनः पृतन्यादय तन्तमिद्धतंव्वज्रेण तन्तमिद्धतम्। दूरे चत्ताय छन्त्सद् गहनं यदिनक्षत्।।
अलंकारान्महादिव्यान्नानारत्नविनिर्मितान् ।
गृहाण देव देवेश प्रसीद परमेश्वर।।
चढ़ाऊँ क्या तुम्हें अब मैं समझ में कुछ नहीं आता।
धरो कानों में दो कुण्डल धरो उर में भी दो माला।।
तभी भोले दिगम्बर का अनोखा रूप भाया है।
तुम्हारी पूजा करने को तुम्हारा दास आया है।।

दक्षिणाद्रव्यम्

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽ आसीत्।
सदाधारः पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम्।
दक्षिणां स्वर्णसहितां यथाशक्ति समर्पिताम।
अनन्तफलदामेनां गृहाण परमेश्वर।।

व्रतों की दक्षिणा किञ्चित समर्पण करने लाया हूँ।
यही उपहार लाया हूँ करो स्वीकार हे शंकर।।
दक्षिणां समर्पयामि।।

मन्त्रपुष्पाञ्जलि :

कण्ठे यस्य विराजतेऽहिगरलं शीर्षे च मन्दाकिनी
वामाङ्के गिरिजाननं कटितटे शार्दूलचर्माम्बरम्।।
माया यस्य रुणद्धि विश्वमखिलं तस्मै नमः शम्भवे
जम्बूवज्जलबिन्दुवज्जलजवज्जम्बालवज्जालवत्।।
असितगिरिसमं स्यात् कज्जलं सिन्धुपात्रे
सुरतरुवरुशाखालेखनी पत्रमुर्वी।।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्व कालं
तदपि तव गुणानामीश पारं न याति।।
नमः श्रीपार्वतीपतये हर हर महादेव। यह कहते हुये भगवान् पर पुष्प अर्पित करे।

मानस चौपाइयाँ

दैहिक दैविक भौतिक तापः, रामराज्य नाहिं काहुहि व्यापा।
सब नर करहिं परस्पर प्रीति, चलहिं स्वधर्म निरतश्रुति नीति।
बैर न कर काहु सम कोई, राम प्रताप विषमता खोई।
नहि दरिद्र कोउ दुखी न दीना, नहि कोउ अवुधन लच्छनहीना।।
राम राज्य बैठे त्रैलोका, हरषित भय गये सब सोका।
मोरे तुम्ह प्रभु गुरुपितु माता, जाऊँ कहाँ तज पद जल जाता।।

विश्व कल्याणार्थ प्रार्थना

फूल हाथ में लेकर कहे :

सर्वेऽत्र सुखिनः सन्तुः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्।।
काले वर्षतु पर्जन्यः पृथ्वी शस्यशालिनी।
देशोऽयं क्षोभरहितो ब्राह्मणाः सन्तु निर्भयाः।।
अपुत्राः पुत्रिण सन्तु पुत्रिणः सन्तु पौत्रिणः।
अधनाः सधनाः सन्तु जीवन्तु स्वस्ति वः सदा।।
स्वस्ति प्रजाभ्यः परिपालयन्तन् न्यायेने मार्गेन महीं महीशाः
गोब्राह्मणेभ्योः सुखनामस्तु नित्यं
लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तुः।।
स्वस्त्यस्तु विश्वस्य खलाः प्रसीदताम्।
ध्यायन्तु भूतानि शिवं मिथो धियः।।
मनश्च भद्रं भजतादधक्षजे।
आवेश्यतां नो मतुरप्यहेतुकी।।

हे नाथ ! सम्पूर्ण विश्व का कल्याण हो।
दुष्ट लोग अपनी दुष्टता को छोड़ कर शान्त हों।
परस्पर हम सब एक दूसरे का हित चिन्तन करें।
हमारा मन शुभ मार्ग में प्रवृत्त हो।
हमारी बुद्धि निष्काम भाव से भगवान् श्री हरि के चरणों में लगे।
(पूज्य श्री हरि बाबा जी महाराज की जय)
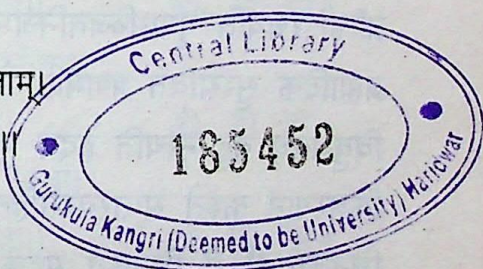
महानीराजन

ॐ जय गंगाधर हर शिव जय गिरिजाधीशा।
त्वं माँ पालय नित्यं कृपया जगदीशा।।
ॐ हर हर हर महादेव।
कैलासे गिरिशिखरे कल्पद्रुमविपिने।
गुञ्जति मधुकर पुञ्जे कुञ्जवने गहने।। ॐ हर हर०
कोकिल कूजित खेलति हंसा वनललिता।
रचयति कलाकलापं नृत्यति मुदसहिता।। ॐ हर हर०
तस्मिल्ललितसुदेशे शाला मणिरचिता।
तन्मध्ये हरनिकटे गौरी मुदसहिता।। ॐ हर हर०
क्रीड़ां रचयति भूषारञ्जितनिजमीशम्।
ब्रह्मादिक सुरसेवित प्रणमति ते शीर्षम्।। ॐ हर हर०
विवुधबधू बहु नृत्यति हृदये मुदसहिता।
किन्नरगानं कुरुते सप्तस्वरसहिता।। ॐ हर हर०
धिनकत थै थै धिनकत मृदङ्ग वादयते।
क्वण-क्वण ललिता वेणुं मधुरं नादयते।। ॐ हर हर०
रुण रुण चरणे रचयति नूपुरमुज्ज्वलिता।
चक्रावर्ते भ्रमयति कुरुते तां धिक ताम्। ॐ हर हर०
तां तां लुपचुपतालं मधुरं नादयते।
अंगुष्ठाङ्गुलिनादं लस्यकतां कुरुते।। ॐ हर हर०
कर्पूरद्युतिगौरं पंचाननसहतिम्।
त्रिनयनशशिधरमौले विषधरकण्ठयुतम्।। ॐ हर हर०

सुन्दरजटाकलापं पावकयुतभालम्।
डमरूत्रिशूलपिनाकं करनृतटकपालम्।। ॐ हर हर०
शंखनिनादं कृत्वा झल्लरि नादयते।
नीराजयते ब्रह्मा वेदऋचां पठते।। ॐ हर हर०
अति मृदुचरणसरोजे हृत्कमले धृत्वा।
अवलोकयति महेशं गौरीशं नत्वा।। ॐ हर हर०
रुंडरचित उर भाला पन्नगमुपवीतम्।
वामविभागे गिरिजारूपं हृतिललितम्।। ॐ हर हर०
सकलशरीरे मनसिजकृतभस्माभरणम्।
श्रीवृषभध्वजरूपं तापत्रयहरणम्।। ॐ हर हर०
वज्रं खड्गत्रिशूलं परुशं धारयते।
अभयांकुशवरपाशं घण्टां वादयते।। ॐ हर हर०
मूर्द्धनि राजति गंगा शिवसंगमुपनीतम्।
रुद्राक्षांकितवक्षसि पन्नगमुपवीतम्।। ॐ हर हर०
ध्यानं आरतिसमये हृदये इति कृत्वा।
रामं त्रिजटानाथं ईशम् अभिनत्वा।। ॐ हर हर०
संगतिमेवं प्रतिदिनपठनं यः कुरुते।
शिवसायुज्यं गच्छति भक्त्या यः श्रृणते।। ॐ हर हर०

लिंगाष्टकम्

ब्रह्ममुरारिसुरार्चितलिङ्गम्, निर्मलभासितशोभितलिङ्गम्।
जन्मजदु:खविनाशकलिङ्गम्, तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ।।१।।
देवमुनि प्रवरार्चितलिङ्गम्, कामदहं करुणाकरलिङ्गम्।
रावणदर्पविनाशनलिङ्गम्, तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ।।२।।

सर्वसुगन्धसुलेपितलिङ्गम्, बुद्धिविवर्द्धनकारणलिङ्गम्।
सिद्धसुरासुरवन्दितलिङ्गम्, तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ।।३।।
कनकमहामणिभूषितलिङ्गम्, फणिपतिवेष्टितशोभितलिङ्गम्।
दक्षसुयज्ञविनाशनलिङ्गम्, तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ।।४।।
कुंकुमचन्दनलेपितलिङ्गम, पंकजहारसुशोभितलिङ्गम्।
संचितपापविनाशनलिङ्गम्, तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ।।५।।
देवगणार्चितसेवितलिङ्गम्, भावैर्भक्तिभिरेव च लिङ्गम्।
दिनकरकोटिप्रभाकरलिङ्गम्, तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ।।६।।
अष्टदलोपरिवेष्टितलिङ्गम्, सर्वसमुद्भवकारणलिङ्गम्।
अष्ट दरिद्रविनाशितलिङ्गम्, तत्प्रणमामिसदाशिव लिङ्गम् ।।७।।
सुरगुरूसुरवरपूजितलिङ्गम्, सरवनपुष्पसदार्चितलिङ्गम्।
परात्परं परमात्मकलिङ्गम्, तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ।।८।।
लिङ्गाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते।।
हरिकर दीपक बजावै शंकर सुरपति,
गणपति झाँझ भैरों झालर झरत हैं।
नारद के करवीन शारदा जपत जस,
चार मुख चार वेद विधि उच्चरत हैं।।
षणमुख रटत सहस्त्रमुख शिव-शिव,
सनक सनन्दनादि पांयन परत हैं।
बालकृष्ण तीन लोक तीस और तीन कोटि
एते शिवशंकर की आरती करत हैं।।

दरस किये ते दुःख दारिद दलत पांय,
परस किये ते पाप पुञ्ज हर लेत हैं।
जल के चढ़ाये जम जातना न पावै कहूँ,
चन्दन चढ़ाये चित चौगुनी सचेत हैं।।
कहत कुमार कुन्द कुसुम कनीर कंज,
कनक चढ़ाये देत कनक निकेत हैं
त्रिदल चढ़ायते त्रिलोचन त्रिपापन को
त्रिगुनी त्रिवेनी की तरंगे करि देत हैं।।
ॐ शिवो गुरुः शिवो देवः शिवो बन्धुः शरीरिणाम्।
शिव आत्मा शिवो जीवः शिवादन्यन्न किंचनम्।
शिवे भक्ति शिवे भक्ति शिवे भक्तिः शरीरिणाम्।।
सदा ब्रूयात्सदा भूया सदाभूयात्सदा मम।।
शरणं तरुणेन्दुशेखरः शरणं में गिरिराजकन्यका।
शरणं पुनरेव ताबुभौ शरणं नान्यदुपैमि दैवतम्।।
वन्दे देवमुमापतिं सुरगुरुं वन्दे जगत्कारणं।
वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं वन्दे पशूनां पतिम्।।
वन्दे सूर्यशशांकवह्निनयनं वन्दे मुकुन्दप्रियं।
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदे वन्दे शिवं शंकरम्।।
निराबलम्वस्य ममावलम्बं विपाटिताशेषविपत्कदत्वम्।
मदीयपापाचलपातशम्बम्, प्रवर्तचां वाचि सदैव बम् बम्।।
।।ॐ कालहर कण्टक हर, दुःखहर दारिद्रयहार।।
करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा श्रवणनयनजं वा मानसं वापराधम्।

विहितमविहितं वा सर्वमतेत्क्षमस्व जय जयकरुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो ॥

(छन्द) हे दीनबन्धु दयालुशंकर जानि जन अपनाइये।
भवसिंधु पार उतार मोंको निज समीप बसाइये।।
जाने अजाने पाप मेरे आप तिनहिं नसाइये।
कर जोर जोर निहोर मांगौं वेगि दरस दिखाइये।।
देवीसहाय सुनाय शिव को प्रेम सहित जे गावहिं।
जग-जोनि से छुटि जायं ते नर सदा सुख पावहिं।।

(दोहा) रे मन क्यों भटकत फिरत करवा भव को ध्यान।
जाने भव भय हरन हित कियो हलाहल पान।।
बार-बार विनती करौं धरौं चरण पर माथ।
निज पद भक्ति भाव मोंहि देहु उमापति नाथ।।
गुरु चरणन शिर नायके विनवत दोऊ कर जोर।
शिवशंकर के चरण में लगा रहे मन मोर।।
भजन करौं भोजन करौं गावहु ताल तरंग।
निस दिन लौ लगी रहे उमापति के संग।।
त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बंधुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव त्वमेव सर्वम् मम देव देव।।

(प्रभाती) भोले बाबा तेरा ही हमको सहारा।
बहुत जनम में भटक लिया मैं फिर भी मिला न किनारा।।
नाव भंवर में पड़ी है शंकर तुम ही खेवनहारा।
भोले बाबा तेरा ही हमको सहारा।।
झूठे जग के सारे रिश्ते, झूठा सब यह नजारा।

बहुत अधम तुमने तारे हैं, 'ओम' भी दास तुम्हारा।।
भोले बाबा तेरा ही हमको सहारा।

२२ **(प्रभाती)** अब शिव पार करो मेरी नैया।
औघट घाट अगाध महा जल बल्ली लगे न खिवैया।
वारि वरोबर वारि रह्यो है तापर अति पुरवैया।। भोले बाबा..
थर थरात कम्पित हिय मेरो शिव की मैं देत दुहैया।
देवी सहाय शरण में आयो शिव पितु गिरिजा मैया।।

(कजली) भोले तुम तो घट-घट वासी जानहु हमरे मन की बात
तोरे बिन मोंहि चैन न आवत, क्या दिन और क्या रात।
जानत नाहीं नेम और पूजा, उमर है बीती जात।
वेद ने जिनको पार न पायो, हमरी कौन बिसात।
एक भरोसो है बस मौंको, तुम्ह दीनन के नाथ।
'ओम' ने अब तो सौंप दियो है, जनम तुम्हारे हाथ।।

उत्तराङ्गपूजन्

ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय
च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च।।
ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टि वर्द्धनम्।
उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्यो मुर्क्षीय 'मामृतात्।
ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
तेह नाकम्महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।।
ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने, नमो वयम्वैश्रवणाय कुर्महे।।
स में कामान्कामाय मह्यम्, कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु।।
कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः।।

ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठय राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात् सार्वभौमः सर्वायुष आन्तादापराधीत् पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया ऽ एकारादिति तदप्येषः श्लोको विगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुतस्यावसन्गृहे।
आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवा सभासद् इति।
ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतो मुखो विश्वतो बाहुरुत विश्वतस्पात्।।
सम्बाहुभ्यान्धमतिसम्पत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देव ऽ एकः।।
ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महदेवाय धीमहिं।।
तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।।

प्रदक्षिणा

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च ।
तानि तानि विनश्यन्तु प्रदक्षिणपदे पदे ।।
पदे पदे या परिपूजकेभ्यः सद्योऽश्वमेघादिफलं ददाति।
तां सर्वपापक्षयहेतुभूतां प्रदक्षिणान्ते परितः करोमि।।
ॐ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्तानिषङ्गिणः।
तेषा छसहस्रयोजने ऽ वधन्वानि तन्मसि ।।

साष्टाङ्ग दण्डवत्

नमः सर्वहितार्थाय जगदाधारहेतवे ।
साष्टाङ्गोऽमं प्रणाम स्तु प्रयत्नेन मया कृतः ।।

विशेषार्घ्यदानम्

एकस्मिन् पात्रे चन्दन्, अक्षत, पुष्प्, बिल्वपत्राणि गंगाजलं शर्करां च प्रक्षिप्य तत्पात्रं जलेन प्रपूर्य जानुभ्यां अवनांगत्वा

अनेन मन्त्रेण त्रिवारमर्घ्यं दद्यात्।

रक्ष रक्ष महादेव रक्ष त्रैलोक्यरक्षक।
भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात्॥
वरदा त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थद।
अनेन सफलार्घ्येण फलदोऽस्तु सदा मम॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीशिवपञ्चायतनदेवताभ्यो नमः विशेषार्घ्यं समर्पयामि॥

क्षमापनम्

ॐ यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनञ्च यद् भवेत्।
क्षन्तुमर्हसि तद्देव कस्य न स्खलितं मनः॥
अज्ञानाद्विस्मृतेर्भ्रान्त्या यन्न्यूनमधिकं कृतम्।
विपरीतं तु यत्सर्वं क्षमस्व परमेश्वर॥
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां यातु त्वत्प्रसादात्महेश्वरः॥
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर।
यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे॥
प्रमादात्कुर्वतां कर्म पच्यवेताध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः॥

ॐ मानस्तोके तनये मानऽआयुषिमानो गोषुमानोऽअश्वेषु रीरिषः।
मानोवीरान्रुद्र भामिनो वधी-र्हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे॥

कृताञ्जलिपुटो भूत्वा चिन्तयेद् हृदि शंकरम्।
ऋण-पातक-दौर्भाग्य-दारिद्रय-विनिवृत्तये॥
अशेषाघविनाशाय प्रसीद मम शंकर।

दुःखशोकाग्निसन्तप्तं संसारभयवपीडितम्।।
बहुरोगकुलं दीनं पाहि मां वृषमध्वज।।

विसर्जनम्

देवागातु विदोगातुं वित्वागातु मित मनस्पत
इमन्देव यज्ञ ७ स्वाहा वातेधाः।।
सम्पूज्य शैलेन्द्रसुतासमेतं मृत्युञ्जयं चन्द्रकलावतंसम्।
प्रभोभितं चारुमृगेन्द्रचर्मणा नमः शिवायेति विसर्जयामि।।
हरो महेश्वरश्चैव शूलपाणिः पिनाकधृक्।
शिवः पशुपतिश्चैव शम्भुरेवं विसर्जनम्।।
यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामकीम्।
इष्टकामस्य सिध्यर्थं पुनरागमनाय च।।
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर।।
ॐ कैलाशे गच्छ भगवन् पाहि मां वृषभध्वज।
मम दौर्भाग्यनाशाय पुनरागमनाय च।।
स्वस्थानं गच्छ सभासदः रक्ष सभासदाभ्युदयं कुरु।
मृदाहरणसंघट्टप्रतिष्ठाह्वानमेव च।।
ब्रह्मार्पणं ब्रह्महविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्।
ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्म समाधिना।।

श्रीशिवताण्डवस्तोत्रम्

जटाटवीगलज्जलप्रवाहपावितस्थले,
गलेऽवलंव्य लम्बितां भुजंगतुंगमालिकाम्।

डमड्डमड्डमड्डमन्निनादवड्डमर्वयं,
चकार चण्डताण्डवं तनोतु नः शिवः शिवम् ॥१॥
शुभोभिता रहें सदैव जाह्नवी सुभाल में।
विराजती सुकण्ठ में सदैव सर्प मालिका॥
डुमडुमड् बजा के डौरु खूब नृत्य कर रहे।
सदैव आशुतोष वे करें प्रसन्न भावना ॥१॥

जटाकटाहसंभ्रमभ्रमन्निलिम्पनिर्झरी,
विलोलिवीचिवल्लरी विराजमानमूर्धनि।
धगद्धगद्धगज्ज्वलल्ललाटपट्टपावके,
किशोरचन्द्रशेखरे रतिः प्रतिक्षणं मम ॥२॥
जटा कटाह मध्य में सदैव जाह्नवी रहे।
तथा तरंग शोभि भाल नेत्र से प्रदीप्त हो॥
सदैव बाल चन्द्रमा विराजमान भाल में।
हमेशा आशुतोष में अगाध प्रेम ही रहे ॥२॥

धराधरेन्द्रनन्दिनी विलासबन्धुबन्धुर,
स्फुरद्दृगन्तसन्ततिप्रमोदमानमानसे।
कृपाकटाक्षधोरणी निरुद्धदुर्धरापदि,
क्वचिद् दिगम्बरे मनो विनोदमेतु वस्तुनि ॥३॥
प्रसन्न चित्त जो सदा विलास पूर्ण दृष्टि से।
करें प्रसन्न चित्त जो सदा कृपा कटाक्ष से।
दिगम्बरी सदैव नग्न देह से बने रहें।
पवित्र भाव आशुतोष में सदा बने रहें ॥३॥

जटाभुजंगपिंगलस्फुरत्फणामणिप्रभा,
कदम्बकुंकुमद्रवप्रलिप्तदिग्वधूमुखे।
मदान्धसिन्धुरासुरत्वगुत्तरीयमेदुरे,
मनोविनोदिमद्भुतं विभर्तु भूतभर्तरि ।।४।।
जटा निवासि सर्प की मणि प्रभा विकास में।
दिशा प्रदीप्त कुंकमावलेप की तरह सभी।।
मदान्ध हस्ति चर्म से पवित्र भूतनाथ में।
विनोद भाव से सदैव चित्त भी लगा रहे ।।४।।

ललाटचत्वरज्वलद्धनञ्जयस्फुलिङ्गभा,
निपीतपञ्चसायकं नमन्निलिम्पनायकम्।
सुधामयूखलेखया विराजमानशेखरम्,
महः कपालिसम्पदे सरिज्जटालमस्तु नः ।।५।।
तृतीय नेत्र अग्नि से प्रदग्ध काम को किया।
बड़े बड़े सभी विनम्र भाव से झुके रहे।।
सदैव चन्द्र से विराजमान भाल हो रहा।
वही प्रकाण्ड तेज आज सम्पदा बढ़ा रहा ।।५।।

सहस्त्रलोचनप्रभृत्यशेषलेखशेखर,
प्रसूनधूलिधोरणी विधूसरांध्रिपीठभूः।
भुजंगराजमालया निबद्धजाटजूटकः,
श्रियै चिराय जायतां चकोरबन्धुशेखरः ।।६।।
बड़े बड़े प्रेकृष्ट देव भी प्रणाम कर रहे।
व सर्पराज वासुकी जटान में बंधे रहे।।

विराजमान चन्द्रमा सदैव भाल पे रहा।
गिरीश तेज ईश्वरीय भावना बना रहा ॥६॥

कराल भाल पटिटका धगद्धगद्धगज्ज्लद्,
धनञ्जयाहुतीकृतप्रचण्डपञ्चसायके।
धराधरेन्द्रनन्दिनीकुचाग्रचित्रपत्रक-
प्रकल्पनैकशिल्पिनि त्रिलोचने रतिर्मम ॥७॥
कराल भाल ज्वाल से प्रचण्ड कमदेव को।
कथावशेष ही किया किया विनष्ट वाम को॥
करें विचित्र अंग पर सदैव चित्रकारियां।
उसी गिरीश तेज में रहे प्रसन्न भावना ॥७॥

नवीनमेघमण्डली निरुद्धदुर्धरस्फुरत्
कुहूनिशीथिनीतम:प्रबन्धबद्धकन्धर:।
निलिम्पनिर्झरीधरस्तनोतु कृत्तिसुन्दर:
कलानिधानबन्धुर: श्रियं जगद्धुरन्धुर: ॥८॥
नवीन मेघ युक्त जो कुहू निशा तमोवृता।
उसी समान कण्ठ में बनी महान कालिमा॥
गजेन्द्र चम्र युक्त जाह्नवी समेत जो सदा।
करें कला निधान वे महान सर्व सम्पदा ॥८॥

प्रफुल्लनीलपंकजप्रपञ्चकालिमप्रभा-
बिडम्बिकण्ठकन्दलीरुचिप्रबद्धकन्धरम्।
स्मरच्छिदं पुरच्छिदं भवच्छिदं मखच्छिदं

गजच्छिदांधकच्छिदन्तमन्तकच्छिदं, भजे ॥९॥
प्रफुल्ल नील जो सरोज की महान नीलिमा।
महेश कण्ठ की बनी उसी समान कालिमा॥
पुरारि काम शत्रु दक्ष यज्ञ के विनाशिता।
गजान्धकादि शत्रु को करूँ प्रणाम मैं सदा॥९॥

अखर्वसर्वमंगलाकलाकदम्बमञ्जरी-
रसप्रेवाहमाधुरीविजृम्भणामधुव्रतम्।
स्मरान्तकं पुरान्तकं भवान्तकं मखान्तकं,
गजान्तकान्धकान्तकं तमन्तकान्तकं भजे ॥१०॥
द्विरेफ के समानजो कला रसादि मोद में।
प्रमत्त वे स्वयं कला निधान हैं विनोद में।
भवादि दुःख हारि वे पुरारि मन्मथारि वे।
करूं प्रणाम मैं उन्हें सदा गजान्धकारि वे ॥१०॥

जयत्यदभ्रविभ्रमभ्रमद्भुजंगमश्वस
द्विनिर्गमत्क्रमस्फुरत्करालभालहव्यवाट्।
धिमिं धिमिं धिमिं ध्वनन्मृंदगतुंगमंगल-
ध्वनिक्रमप्रवर्तितः प्रचण्डताण्डवः शिवः ॥११॥
प्रसन्न घूमते जभी स्वकीय नृत्य काल में।
प्रवृद्ध सर्प श्वास से प्रदीप्त अग्नि भाल में॥
धिमिं धिमिं मृदंङ्ग की ध्वनि समान नृत्य जो।
करें, उन्हीं महेश की सदा विजय महान हो ॥११॥

दृषद्विचित्रतल्पयो: भुजंङ्गमौक्तिकस्रजो:,
गरिष्ठरत्नेजोष्ठयो: सुहृद्विपक्षपक्षयो:
तृणारविन्दचक्षुषो: प्रजामहीमहेन्द्रयो:
समप्रवृत्तिक: सदा सदाशिवं भजाम्यहम् ॥१२॥
धरा व पुण्य सेज में भुजङ्ग और हार में।
व रत्न और लोष्ठ में सुहृत व शत्रु पक्ष में॥
कुरूप और सुरूप में प्रजा और नृपेन्द्र में।
समान भाव से रहूँ भजूँ सदा महेश मैं ॥१२॥

कदानिलिम्पनिर्झरीनिकुञ्जकोटरे बसन्,
विमुक्तदुर्मति: सदा शिर:स्थमञ्जलिं वहन्।
विलोललोललोचनो ललामभाललग्नक:,
शिवेति मंत्रमुच्चरन् कदा सुखी भवाम्यहम् ॥१३॥
महान जाह्नवी निकुंज में सदा निवास से।
बुरे विचार छोड़ हाथ जोड़ त्याग लालसा॥
निजाश्रु पूर्ण नेत्र से शिवेति मंत्र बोलता।
इसी प्रकार चित्त में रहे सदा प्रसन्नता ॥१३॥

निलिम्पनाथनागरीकदम्बमौलिमल्लिका-
निगुम्फनिर्भरक्षरन्मधूष्णिकामनोहर:।
तनोतु नो मनोमुदं विनोदिनीमहर्निशं
परश्रिय: परं पदं तदंगजत्विषां चय: ॥१४॥
यशोवगान काल में खड़ी समीप अप्सरा।
शरीर गौर पर पड़े ललाट पुष्प धूलिका॥

विचित्र देह की छटा बने उसी प्रभाव से।
करे प्रसन्न चित्त की वही छटा स्वभाव से ।।१४।।

प्रचण्डवाडवानल प्रभा शुभ प्रचारिणी,
महाष्टसिद्धि कामिनी जनावहूत जल्पनी।
विमुक्तवामलोचना विवाह कालिक ध्वनि:
शिवेतिमन्त्रभूषणं जगज्जयाय जायताम् ।।१५।।
अमंगल प्रणाशिनी सुमंगल प्रचारिणी।
महाष्ट सिद्धि युक्त कामिनी जनानुगामिनी।।
शिवेति मन्त्र युक्त पार्वती विवाह की ध्वनी।
बने सदैव देश के महान कलंक नाशिनी ।।१५।।

पूजावसान समये दशवक्त्रगीतं,
य: शम्भुपूजनमिदं पठति प्रदोषे।
तस्य स्थिरां रथ गजेन्द्र तुरंग युक्तां,
लक्ष्मी सदैव सुमुखीं प्रददाति शम्भु: ।।१६।।
पूजा प्रदोष व्रत की करके हमेशा।
जो भक्ति युक्त शिव ताण्डव को पढ़ेंगे।।
सम्पत्ति प्राप्त करके शिव की कृपा से।
हस्ती तुरंग रथ आदि उन्हें मिलेंगे ।।१६।।

●

श्रीशिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम्

नागेन्द्रहाराय विलोचनाय
भस्माङ्गरागाय महेश्वराय ।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय
तस्मै 'न'काराय नमः शिवाय ॥१॥

मन्दाकिनीसलिलचन्दनचर्चिताय
नन्दीश्वरप्रमथनाथमहेश्वराय ।
मन्दारपुष्पबहुपुष्पसुपूजिताय
तस्मै 'म'काराय नमः शिवाय ॥२॥

शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्द-
सूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय ।
श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय
तस्मै 'शि'काराय नमः शिवाय ॥३॥

वसिष्ठकुम्भोद्भवगौतमार्य-
मुनीन्द्रदेवार्चितशेखराय ।
चन्द्रार्कवैश्वानरलोचनाय
तस्मै 'व'काराय नमः शिवाय ॥४॥

यक्षस्वरूपाय जटाधराय
पिनाकहस्ताय सनातनाय ।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय
तस्मै 'य'काराय नमः शिवाय ॥५॥

पञ्चाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसंनिधौ ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ॥६॥

॥इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितं शिवपञ्चाक्षरस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

श्रीशिवमहिम्नः स्तोत्रम्

पुष्पदन्त उवाच

महिम्नः पारं ते परमविदुषो यद्यसदृशी
स्तुतिर्ब्रह्मादीनामपि तदवसन्नास्त्वयि गिरः ।
अथावाच्यः सर्वः स्वमतिपरिणामावधि गृणन्
ममाप्येष स्तोत्रे हर निरपवादः परिकरः ॥१॥

अतीतः पन्थानं तव च महिमा वाङ्मनसयो-
रतद्व्यावृत्त्या यं चकितमभिधत्ते श्रुतिरपि ।
स कस्य स्तोतव्यः कतिविधगुणः कस्य विषयः
पदे त्वर्वाचीने पतति न मनः कस्य न वचः ॥२॥

मधुस्फीता वाचः परमममृतं निर्मितवत-
स्तव ब्रह्मन् किं वागपि सुरगुरोर्विस्मयपदम् ।
मम त्वेतां वाणीं गुणकथनपुण्येन भवतः
पुनामीत्यर्थेऽस्मिन् पुरमथन बुद्धिर्व्यवसिता ॥३॥

तवैश्वर्यं यत्तज्जगदुदयरक्षाप्रलयकृत्
त्रयीवस्तुव्यस्तं तिसृषु गुणभिन्नासु तनुषु ।
अभव्यानामस्मिन् वरद रमणीयामरमणीं
विहन्तुं व्याक्रोशीं विदधत इहैके जडधियः ॥४॥

किमीहः किं कायः स खलु किमुपायस्त्रिभुवनं
किमाधारो धाता सृजति किमुपादान इति च ।
अतर्क्यैश्वर्ये त्वय्यनवसरदुःस्थो हतधियः
कुतर्कोऽयं कांश्चिन्मुखरयति मोहाय जगतः ॥५॥

अजन्मानो लोकाः किमवयववन्तोऽपि जगता-
मधिष्ठातारं किं भवविधिरनादृत्य भवति ।
अनीशो वा कुर्याद् भुवनजनने कः परिकरो
यतो मन्दास्त्वां प्रत्यमरवर संशेरत इमे ॥६॥

त्रयी सांख्यं योगः पशुपतिमतं वैष्णवमिति
प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिदमदः पथ्यमिति च ।
रुचीनां वैचित्र्यादृजुकुटिलनानापथजुषां
नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव ॥७॥

महोक्षः खट्वाङ्गं परशुरजिनं भस्म फणिनः
कपालं चेतीयत्तव वरद तन्त्रोपकरणम् ।
सुरास्तां तामृद्धिं दधति च भवद्भ्रूप्रणिहितां
न हि स्वात्मारामं विषयमृगतृष्णा भ्रमयति ॥८॥

ध्रुवं कश्चित् सर्वं सकलमपरस्त्वध्रुवमिदं
परो ध्रौव्याध्रौव्ये जगति गदति व्यस्तविषये ।
समस्तेऽप्येतस्मिन् पुरमथन तैर्विस्मित इव
स्तुवञ्जिह्रेमि त्वां न खलु ननु धृष्टा मुखरता ॥९॥

तवैश्वर्यं यत्नाद् यदुपरि विरिञ्चो हरिरधः
परिच्छेतुं यातावनलमनलस्कन्धवपुषः ।
ततो भक्तिश्रद्धाभरगुरुगृणद्भ्यां गिरिश यत्
स्वयं तस्थे ताभ्यां तव किमनुवृत्तिर्न फलति ॥१०॥

अयत्नादापाद्य त्रिभुवनमवैरव्यतिकरं
दशास्यो यद् बाहूनभृत रणकण्डूपरवशान् ।

शिर:पद्मश्रेणीरचितचरणाम्भोरुहबले:
स्थिरायास्त्वद्भक्तेस्त्रिपुरहर विस्फूर्जितमिदम् ॥११॥
अमुष्य त्वत्सेवासमधिगतसारं भुजवनं
बलात् कैलासेऽपि त्वदधिवसतौ विक्रमयत: ।
अलभ्या पातालेऽप्यलसचलिताङ्गुष्ठशिरसि
प्रतिष्ठा त्वय्यासीद् ध्रुवमुपचितो मुह्यति खल: ॥१२॥
यदुद्धिं सुत्राम्णो वरद परमोच्चैरपि सती-
मधश्चक्रे वाण: परिजनविधेयस्त्रिभुवन: ।
न तच्चित्रं तस्मिन् वरिवसितरि त्वच्चरणयो-
र्न कस्याप्युन्नत्यै भवति शिरसस्त्वय्यवनति: ॥१३॥
अकाण्डब्रह्माण्डक्षयचकितदेवासुरकृपा-
विधेयस्याऽऽसीद्यस्त्रिनयनविषं संहृतवत: ।
स कल्माष: कण्ठे तव न कुरुते न श्रियमहो
विकारोऽपि श्लाघ्यो भुवनभयभङ्गव्यसनिन: ॥१४॥
असिद्धार्था नैव क्वचिदपि सदेवासुरनरे
निवर्तन्ते नित्यं जगति जयिनो यस्य विशिखा: ।
स पश्यन्नीश त्वामितरसुरसाधारणमभूत्
स्मर: स्मर्तव्यात्मा नहि वशिषु पथ्य: परिभव: ॥१५॥
मही पादाघाताद् व्रजति सहसा संशयपदं
पदं विष्णोर्भ्राम्यद्भुजपरिघरुग्णग्रहगणम् ।
मुहुर्द्यौर्दौ:स्थयं यात्यनिभृतजटाताडिततटा
जगद्रक्षायै त्वं नटसि ननु वामैव विभुता ॥१६॥

वियद्व्यापी तारागणगुणितफेनोद्गमरुचिः
प्रवाहो वारां यः पृषतलघुदृष्टः शिरसि ते ।
जगद् द्वीपाकारं जलधिवलयं तेन कृतमि-
त्यनेनैवोन्नेयं धृतमहिम दिव्यं तव वपुः ॥१७॥

रथः क्षोणी यन्ता शतधृतिरगेन्द्रो धनुरथो
रथाङ्गे चन्द्रार्कौ रथचरणपाणिः शर इति ।
दिधक्षोस्ते कोऽयं त्रिपुरतृणमाडम्बरविधि-
र्विधेयैः क्रीडन्त्यो न खलु परतन्त्राः प्रभुधियः ॥१८॥

हरिस्ते साहस्रं कमलबलिमाधाय पदयो-
र्यदेकोने तस्मिन् निजमुदहरन्नेत्रकमलम् ।
गतो भक्त्युद्रेकः परिणतिमसौ चक्रवपुषा
त्रयाणां रक्षायै त्रिपुरहर जागर्ति जगताम् ॥१९॥

क्रतौ सुप्ते जाग्रत्त्वमसि फलयोगे क्रतुमतां
क्व कर्म प्रध्वस्तं फलति पुरुषाराधनमृते ।
अतस्त्वां सम्प्रेक्ष्य क्रतुषु फलदानप्रतिभुवं
श्रुतौ श्रद्धां बद्ध्वा दृढपरिकरः कर्मसु जनः ॥२०॥

क्रियादक्षो दक्षः क्रतुपतिरधीशस्तनुभृता-
मृषीणामार्त्विज्यं शरणद सदस्याः सुरगणाः ।
क्रतुभ्रंशस्त्वत्तः क्रतुफलविधानव्यसनिनो
ध्रुवं कर्तुः श्रद्धाविधुरमभिचाराय हि मखाः ॥२१॥

प्रजानाथं नाथ प्रसभमभिकं स्वां दुहितरं
गतं रोहिभ्दूतां रिरमयिषुमृष्यस्य वपुषा ।

त्रसन्तं तेऽद्यापि त्यजति न मृगव्याधरभसः ॥२२॥
स्वलावण्याशंसाधृतधनुषमह्नाय तृणवत्
पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वा पुरमथन पुष्पायुधमपि ।
यदि स्त्रैणं देवी यमनिरत देहार्धघटना-
दवैति त्वामद्धा बत वरद मुग्धा युवतयः ॥२३॥
श्मशानेष्वाक्रीडा स्मरहर पिशाचाः सहचरा-
श्चिताभस्मालेपः स्रगपि नृकरोटीपरिकरः ।
अमङ्गल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलं
तथापि स्मर्तृणां वरद परमं मङ्गलमसि ॥२४॥
मनः प्रत्यक्चित्ते सविधमवधायात्तमरुतः
प्रहृष्यद्रोमाणः प्रमदसलिलोत्सङ्गितदृशः ।
यदालोक्याह्लादं ह्रद इव निमज्यामृतमये
दधत्यन्तस्तत्त्वं किमपि यमिनस्तत् किल भवान् ॥२५॥
त्वमर्कस्त्वं सोमस्त्वमसि पवनस्त्वं हुतवह-
स्त्वमापस्त्वं व्योम त्वमु धरणिरात्मा त्वमिति च ।
परिच्छिन्नामेवं त्वयि परिणता बिभ्रतु गिरं
न विद्मस्तत्तत्त्वं वयमिह तु यत्त्वं न भवसि ॥२६॥
त्रयीं तिस्रो वृत्तीस्त्रिभुवनमथो त्रीनपि सुरा-
नकाराद्यैर्वर्णैस्त्रिभिरभिदधत् तीर्णविकृति ।
तुरीयं ते धाम ध्वनिभिरवरुन्धानमणुभिः
समस्तं व्यस्तं त्वां शरणद गृणात्योमिति पदम् ॥२७॥
भवः शर्वो रुद्रः पशुपतिरथोग्रः सहमहां-

स्तथा भीमेशानाविति यदभिधानाष्टकमिदम् ।
अमुष्मिन् प्रत्येकं प्रविचरति देव श्रुतिरपि
प्रियायास्मै धाम्ने प्रविहितनमस्योऽस्मि भवते ।।२८।।
नमो नेदिष्ठाय प्रियदव दविष्ठाय च नमो
नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहर महिष्ठाय च नमः।
नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयनयविष्ठाय च नमो
नमः सर्वस्मै ते तदिदमिति शर्वाय च नमः ।।२९।।
बहुलरजसे विश्वोत्पत्तौ भवाय नमो नमः
प्रबलतमसे तत्संहारे हराय नमो नमः ।
जनसुखकृते सत्त्वोद्रिक्तौ मृडाय नमो नमः
प्रमहसि पदे निस्त्रैगुण्ये शिवाय नमो नमः ।।३०।।
कृशपरिणति चेतः क्लेशवश्यं क्व चेदं
क्व च तव गुणसीमोल्लङ्घिनी शश्वदृद्धिः ।
इति चकितममन्दीकृत्य मां भक्तिराधाद्
वरद चरणयोस्ते वाक्यपुष्पोपहारम् ।।३१।।
असितगिरिसमं स्यात् कज्जलं सिन्धुपात्रे
सुरतरुवरशाखा लेखनी पत्रमुर्वी ।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं
तदपि तव गुणानामीश पारंत्तन याति ।।३२।।
असुरसुरमुनीन्द्रैरर्चितस्येन्दुमौले-
र्ग्रथितगुणमहिम्नो निर्गुणस्येश्वरस्य ।
सकलगुणवरिष्ठः पुष्पदन्ताभिधानो

रुचिरमलघुवृत्तैः स्तोत्रमेतच्चकार ॥३३॥
अरहरहरनवद्यं धूर्जटेः स्तोत्रमेतत्
पठति परमभक्त्या शुद्धचित्तः पुमान् यः ।
स भवति शिवलोके रुद्रतुल्यस्तथात्र
प्रचुरतरधनायुः पुत्रवान् कीर्तिमांश्च ॥३४॥
महेशान्नापरो देवो महिम्नो नापरा स्तुतिः।
अघोरान्नापरो मन्त्रो नास्ति तत्त्वं गुरोः परम् ॥३५॥
दीक्षा दानं तपस्तीर्थं ज्ञानं यागादिकाः क्रियाः।
महिम्नः स्तवपाठस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम् ॥३६॥
कुसुमदशननामा सर्वगन्धर्वराजः
शिशुशशिधरमौलेर्देवदेवस्य दासः ।
स खलु निजमहिम्नो भ्रष्ट एवास्य रोषात्
स्तवनमिदमकार्षीद् दिव्यदिव्यं महिम्नः ॥३७॥
सुरवरमुनिपूज्यं स्वर्गमोक्षैकहेतुं
पठति यदि मनुष्यः प्राञ्जलिर्नान्यचेताः ।
व्रजति शिवसमीपं किन्नरैः स्तूयमानः
स्तवनमिदममोघं युष्पदन्तप्रणीतम् ॥३८॥
आसमाप्तमिदं स्तोत्रं पुण्यं गन्धर्वभाषितम्।
अनौपम्यं मनोहारि शिवमीश्वरवर्णनम् ॥३९॥
इत्येषा वाङ्मयी पूजा श्रीमच्छङ्करपादयोः।
अर्पिता तेन देवेशः प्रीयतां मे सदाशिवः ॥४०॥
तव तत्त्वं न जानामि कीदृशोऽसि महेश्वर।

यादृशोऽसि महादेव तादृशाय नमो नमः ॥४१॥

एककालं द्विकालं वा त्रिकालं यः पठेन्नरः।
सर्वपापविनिर्मुक्तः शिवलोके महीयते ॥४२॥

श्रीपुष्पदन्तमुखपङ्कजनिर्गतेन
स्तोत्रेण किल्बिषहरेण हरप्रियेण ।
कण्ठस्थितेन पठितेन समाहितेन
सुप्रीणितो भवति भूतपतिर्महेशः ॥४३॥

॥श्रीशिवमहिम्नः स्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

●

श्रीशिवमानसपूजा

रत्नैः कल्पितमासनं हिमजलैः स्नानं च दिव्याम्बरं
नानारत्नविभूषितं मृगमदामोदाङ्कितं चन्दनम् ।
जातीचम्पकबिल्वपत्ररचितं पुष्पं च धूपं तथा
दीपं देव दयानिधे पशुपते हृत्कल्पितं गृह्यताम् ॥१॥

सौवर्णे नवरत्नखण्डरचिते पात्रे घृतं पायसं
भक्ष्यं पञ्चविधं पयोदधियुतं रम्भाफलं पानकम् ।
शाकानामयुतं जलं रुचिकरं कर्पूरखण्डोज्ज्वलं
ताम्बूलं मनसा मया विरचितं भक्त्या प्रभो स्वीकुरु ॥२॥

छत्रं चामरयोर्युगं व्यजनकं चादर्शकं निर्मलं
वीणाभेरिमृदङ्गकाहलकला गीतं च नृत्यं तथा ।
साष्टाङ्गं प्रणतिः स्तुतिर्बहुविधा ह्येतत्समस्तं मया

सङ्कल्पेन समर्पितं तव विभो पूजां गृहाण प्रभो ॥३॥

आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं
पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः ।
सञ्चारः पदयोः प्रदक्षिणाविधिः स्तोत्राणि सर्वा गिरो
यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं शम्भो तवाराधनम् ॥४॥

करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा
श्रवणनयनजं वा मानसं वापराधम् ।
विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व
जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो ॥५॥

॥इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचिता शिवमानसपूजा समाप्ता॥

●

श्रीरुद्राष्टकस्तोत्रम्

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं
विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपम् ॥
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं
चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहम् ॥१॥

निराकारमोंकारमूलं तुरीयं
गिरा ज्ञान गोतीतमीशं गिरीशम्॥
करालं महाकालकालं कृपालं
गुणागारसंसारपारं नतोऽहं ॥२॥

तुषाराद्रिसंकाशगौरंगभीरं
मनोभूतकोटिप्रभाश्रीशरीरम् ॥
स्फुरन्मौलिकल्लोलिनीचारुगंगा

लसद्भालबालेन्दु कंठे भुंजगा ॥३॥

चलत्कुंडलं भ्रूसुनेत्रं विशालं
प्रसन्नानं नीलकठं दयालम् ॥
मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालं
प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि ॥४॥

प्रचंडं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं-
अखडं अजं भानुकोटिप्रकाशम् ॥
त्रय: शूलनिर्मूलनं शूलपाणिं
भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यम् ॥५॥

कलातीतकल्याणकल्पान्तकारी
सदा सज्जनानन्ददाता पुरारी ॥
चिदानन्दसन्दोहमोहापहारी
प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी ॥६॥

न यावद् उमानाथ पादारविन्द
भजन्तीह लोके परे वा नराणाम् ॥
न तावत्सुखं शान्ति सन्तापनाशं
प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासं ॥७॥

न जानामि योगं जपं नैव पूजां
नतोऽहं सदा सर्वदा शंभु तुभ्यम् ॥
जराजन्म-दु:खौघ-तातप्यमानं
प्रभो पाहि आपन्नमामीश शंभो ॥८॥

रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेणा हरतोषये ।
ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति ॥९॥

श्रीविश्वनाथाष्टकस्तोत्रम्

गगातरंगरमणीयजटाकलापं
गौरीनिरन्तरविभूषितवामभागम् ।
नारायणप्रियमनंगमदापहारं
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम् ॥१॥
वाचामगोचरमनेकगुणस्वरूपं
वागीशविष्णुसुरसेवितपादपीठम् ।
वामेन विग्रहवरेण कलत्रवन्तं
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम् ॥२॥
भूताधिप भुजंगभूषणभूषितांगं
व्याघ्राजिनाम्बरधरं जटिलं त्रिनेत्रम् ।
पाशांकुशाभवरप्रदशूलपाणिं
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम् ॥३॥
शीतांशुशोभितकिरीटविराजमानं
भालेक्षणानलविशोषितपञ्चबाणम् ।
नागाधिपारचितभासुरकर्णपूरं,
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम् ॥४॥
पंचाननं दुरितमत्तमतंगजानां
नागान्तकं दनुजपुंगवपन्नागानाम् ।
दावानलं मरणशोकजरारवीनां,
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम् ॥५॥

तेजोमयं सगुणनिर्गुणमद्वितीय-
मानन्दकन्दमपराजितमप्रमेयम् ।
नागात्मकं सकलनिष्कलमात्मरूपं
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम् ॥६॥

आशां विहाय परिहृत्य परस्य निदां
पापे रतिं य सुनिवार्य मनः समाधौ ।
आदाय हृत्कमलमध्यगतं परेशं
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम् ॥७॥

रागादिदोषरहितं स्वजनानुरागं
वैराग्यशांतिनिलयं गिरिजासहायम् ।
माधुर्यधैर्यसुभगं गरलाभिरामं
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम् ॥८॥

वाराणसीपुरपतेः स्तवनं शिवस्य,
व्याख्यातमष्टकमिदं पठते मनुष्यः ।
विद्यां श्रियं विपुलसौख्यमनंतकीर्तिं
सम्प्राप्य देहविलये लभते च मोक्षम् ॥९॥

विश्वनाथाष्टकमिदं यः पठेच्छिवन्निधौ ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सहमोदते ॥१०॥

इति श्रीवेदव्यासकृतं विश्वनाथाष्टकं सम्पूर्णम्

श्रीवेदसारशिवस्तोत्रम्

पशूनां पतिं पापनाशं परेशं,
गजेन्द्रस्य कृत्तिं वसानं वरेण्यम् ।
जटाजूटमध्ये स्फुरद्गाङ्गवारिं,
महादेवमेकं स्मरामि स्मरामि ॥१॥
महेशं सुरेशं सुरारर्तिनाशं,
विभुं विश्वनाथं विभूत्यंगभूषम् ।
विरुपाक्षमिन्द्वर्कवह्नित्रिनेत्रं,
सदानन्दमीडे प्रभुं पञ्चवक्त्रम् ॥२॥
गिरीशं गणेशं गले नीलवर्णं,
गजेन्द्राधिरूढं गुणातीतरूपम् ।
भवं भास्वरं भस्मना भूषितांगं,
भवानीकलत्रं भजे पञ्चवक्त्रम् ॥३॥
शिवाशान्तशम्भो शशांकार्धमौले,
महेशान, शूलिन् जटाजूटधारिन् ।
त्वमेको जगद्व्यापको विश्वरूपः,
प्रसीद प्रसीद प्रभो विश्वरूप ॥४॥
परमात्मानमेकं जगद्बीजमाद्यं,
निरीहं निराकारमोंकारवेद्यम् ।
यतो जायते पाल्यते येन विश्वं,
तमीशं भजे लीयते यत्र विश्वम् ॥५॥
न भूमिर्न च्चापो न वह्निर्न-वायु
र्नचाकाश मध्ये न तन्द्रा न निद्रा ।

न ग्रीष्मो न शीतं न देशो न वेषो,
न यस्यास्ति मूर्तिस्त्रिमूर्तिन्तमीडे ।।६।।
अजं शाश्वतं कारणं कारणानां,
शिवं केवलं भासकं भासकानाम् ।
तुरीयं तमःपारमाद्यन्तहीनं,
प्रपद्ये परं पावनं द्वैतहीनम् ।।७।।
नमस्ते-नमस्ते विभो विश्वमूर्ते,
नमस्ते-नमस्ते चिदानन्दमूर्ते ।
नमस्ते-नमस्ते तपोयोगगम्यं,
नमस्ते-नमस्ते श्रुतिज्ञानगम्यम् ।।८।।
प्रभो शूलपाणे विभो विश्वनाथ,
महादेव शम्भो महेश त्रिनेत्र ।
शिवाकान्त शान्त स्मरारे पुरारे,
त्वदन्यो वरेण्यो न मान्यो न गण्यः ।।९।।
शम्भो महेश करुणामय शूलपाणे,
गौरीपते पशुपते पशुपाशनाशिन् ।
काशीपते करुणया जगतस्त्वमेक-
स्त्वं हंसि पासि विदधासिमहेश्वरोऽसि ।।१०।।
त्वत्तो जगद्भवति देव भव स्मरारे,
त्वय्येव तिष्ठति जगन्मृड विश्वनाथ ।
त्वय्येव गच्छति लयं जगदेतदीश,
लिंगात्मकं हर चराचर विश्वरुपिन् ।।११।।

(इति श्रीमच्छकराचार्यविरचितं, वेदसारशिवस्तोत्र सम्पूर्णम्)

श्रीदारिद्रयदहनस्तोत्रम्

विश्वेश्वराय नरकर्णवतारणाय,
कर्णामृताय शशिशेखरधारणाय ।
कर्पूम्कान्तिधवलाय जटाधराय,
दारिद्रयदु:खदहनाय नमः शिवाय ॥१॥
गौरीप्रियाय रजनीशकलाधराय,
कालान्तकाय भुजगाधिपकंकणाय ।
गंगाधराय गजराजविमर्दनाय,
दारिद्रयदु:खदहनाय नमः शिवाय ॥२॥
भक्तप्रियाय भवरोगभयापहाय,
उग्राय दुर्गभवसागरतारणाय ।
ज्योतिर्मयाय गुणनामसुनृत्यकाय,
दारिद्रयदु:खदहनाय नमः शिवाय ॥३॥
चर्माम्बराय शवभस्मविलेपनाय,
भालेक्षणाय मणिकुण्डलमण्डिताय ।
मंजीरपादयुगलाय जटाधराय,
दारिद्रयदु:खदहनाय नमः शिवाय ॥४॥
पंचाननाय फणिराजविभूषणाय,
हेमांशुकाय भुवनत्रयमण्डिताय ।
आनन्दभूमिवरदाय तमोमयाय,
दारिद्रयदु:खदहनाय नमः शिवाय ॥५॥
भानुप्रियाय भवसागरतारणाय,

कालान्तकाय कमलासनपूजिताय ।
नेत्रत्रयाय शुभलक्षणलक्षिताय,
दारिद्रयदुःखदहनाय नमः शिवाय ॥६॥
रामप्रियाय रघुनाथवरप्रदाय,
नागप्रियाय नरकार्णवतारणाय ।
पुण्येषु पुण्यभरिताय सुरार्चिताय,
दारिद्रयदुःखदहनाय नमः शिवाय ॥८॥
वसिष्ठेन कृतं स्तोत्रं सर्वरोगनिवारणम् ।
सर्वसम्पत्करं नित्यं पुत्रपौत्रादिवर्द्धनम् ॥९॥
त्रिसंध्यं यः पठेन्नित्यं स हि स्वर्गमवाप्नुयात् ।
पूजा काले पठेन्नित्यं, लक्ष्मी वसति सर्वदा ॥१०॥

इति श्रीमदृषिवसिष्टविरचितं दारिद्र्यदहनस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

●

श्रीशंकराचार्यकृतं

श्रीअन्नपूर्णास्तोतम्

नित्यानन्दकरी वराभयकरी सौन्दर्यरत्नाकरी
निर्धूताखिलघोरपावनकरी काशीपुराधीश्वरी ।
प्रालेयाचलवंश पावनकारी काशींपुराधीश्वरी,
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥१॥
नानारत्नविचित्रभूषणकरी, हेमाम्बराडम्बरी,
मुक्ता-हारविलम्बमानविलसद्वक्षोज-कुम्भान्तरी ।
काश्मीरागरुवासिताङ्गरूचिरे काशीपुराधीश्वरी,

भिक्षां देहि कृपालम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥२॥
योगानन्दकरी रिपुक्षयकरी धर्मार्थनिष्ठाकरी,
चन्द्रार्कानलभासमानलहरी त्रैलोक्यरक्षाकरी ।
सर्वैश्वर्यसमस्तावाञ्छितकरी काशीपुराधीश्वरी,
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥३॥
कैलासाचलकंदरालयकरी गौरी उमा शंकरी,
कौमारी निगमार्थगोचरकरी ओंकारबीजाक्षरी ।
मोक्षद्वार-कपाट-पाटनकरी काशीपुराधीश्वरी,
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥४॥
दृश्यादृश्यविभूतिवाहनकरी ब्रह्माण्डभाण्डोदरी,
लीलानाटकसूत्रभेदनकरी विज्ञानदीपाङ्कुरी ।
श्रीविश्वेशमनःप्रसादनकरी काशीपुराधीश्वरी,
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥५॥
उर्वी सर्वजनेश्वरी भगवती मातान्नपूर्णेश्वरी,
वेणीनीलसमानकुन्तलहरी नित्यान्नदानेश्वरी ।
सर्वानन्दकरी सदाशुभकरी काशीपुराधीश्वरी,
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥६॥
आदिक्षान्तसमस्तवर्णनकरी शम्भोस्त्रिभावाकरी,
काश्मीरा त्रिजलेश्वरी त्रिलहरी नित्याङ्कुरा शर्वरी ।
कामाकांक्षकरी जनोदयकरी काशीपुराधीश्वरी,
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥७॥
देवी सर्वविचित्ररत्नरचिता दाक्षायणी सुन्दरी,

वामं स्वादुपयोधरप्रियकरी सौभाग्यमाहेश्वरी ।
भक्ताभीष्टकरी सदाशुभकरी काशीपुराधीश्वरी,
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥८॥
चन्द्रार्कानलकोटिकोटिसदृशी चन्द्रांशुबिम्बाधरीं,
चन्द्रार्काग्निसमानकुन्तलधरी चन्द्रार्कवर्णेश्वरी ।
मालापुस्तकपाशसाङ्कुशधरी काशीपुराधीश्वरी,
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥९॥
क्षत्रत्राणकरी महाऽभवकरी माता कृपासागरी,
साक्षान्मोक्षकरी सदाशिवकरी विश्वेश्वर श्रीधरी ।
दक्षाक्रन्दकरी निरामयकरी काशीपुराधीश्वरी,
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥१०॥
अन्नपूर्णे सदापूर्णे शंकराप्राणवल्लभे,
ज्ञानवैराग्यसिध्दयर्थं भिक्षां देहि च पार्वति ॥११॥
माता च पार्वती देवी पिता देवो महेश्वरः।
बान्धवाः शिवभक्ताश्च स्वदेशो भुवनत्रयम् ॥१२॥

●

।। श्रीभगवतीस्तोत्रम् ।।

ज़य भगवती देवी नमो वर दे, जाय पाप विनाशनि बहुफलदे ।
जय शुम्भ निशुम्भ कपाल धरे, प्रणमामि तु देवी नरार्तिहरे ॥१॥

जयचन्द्र दिवाकर नेत्र धरें, जय पावक भूषित वस्त्र धरे ।
जय भैरव देह निलीन परे, जय अन्धक दैत्य विशोष करे ॥२॥

जय मर्हिष विमर्दिन शूल करे, जय लोक समस्तक पाप हरे ।
जय देवी पितामह विष्णु नुते, जय भास्करशक्र शिरोऽवनते ॥३॥

जय षण्मुख सायुध ईश नुते, जय सागर गामिनी शम्भु नुते ।
जय दुःख दरिद्र विनाश करे, जय पुत्र कलत्र विवृद्धि करे ॥४॥

जय देवी समस्त शरीर धरे, जय नाक विदर्शिनि दुःख हरे ।
जय व्याधि विनाशिनी मोक्ष करे, जय वाञ्छितदायिनी सिद्ध करे ॥५॥

एतद्व्यास कृतं स्तोत्रं यः पठेत् नियतः शुचि ।
गृहे वा शुद्धभावेन प्रीतां भगवतीं सदा ॥६॥

●

हे शारदे माँ! हे शारदे माँ! अज्ञानता से हमें तार दे माँ
तू स्वर की देवी है संगीत तुझसे
हर शब्द तेरा है हर गीत तुझसे
हम हैं अकेले, हम हैं अधूरे, तेरी शरण अब हमें प्यार दे माँ
हे शारदे माँ.............

वेदों की भाषा, पुराणों की वाणी
मुनियों ने समझी है, गुनियों ने जानी
हम भी तो समझें, हम भी तो जानें, विद्या का हमको अधिकार दे माँ
हे शारदे माँ.............

तू श्वेत वर्णी, कमल पर बिराजे
हाथों में वीणा, मुकुट सर पर साजे
मन से हमारे मिटा दो अन्धेरे, हमको उजालों का संसार दे माँ
हे शारदे माँ.............

●

भवान्यष्टकम्

न तातो न माता न बन्धुर्न दाता,
न पुत्रो न पुत्री न भृत्यो न भर्ता।
न जाया न विद्या न वृत्तिर्ममैव,
गतिर्स्त्वं गतिर्स्त्वं त्वमेका भवानी ।।

न माता पिता बन्धु सेवक न स्वामी, न जाया न पुत्रादि विद्या न वृती।
न कोई चले साथ आश्रय तुम्हीं हो, मेरी गति मेरी गति तू ही है भवानी।।

भवाब्धावपारे महादुःखभीरुः,
पपात प्रकामी प्रलोभी प्रमत्तः ।
कुसंसारपाशप्रबद्धः सदाऽहं,
गतिर्स्त्वं गतिर्स्त्वं त्वमेका भवानी ।।

दुःख से डरा जग भंवर में फंसा हूँ, महापातकी लालची नीच कामी।
जगत बन्धनों में बँधा हूँ सदा से, मेरी गति मेरी मेरी गति तुम्ही हो भवानी।।

न जानामि ध्यानं न ध्यानयोगम्,
न जानामि तन्त्रं न च स्तोत्रमन्त्रम् ।
न जानामि पूजां न च न्यासयोगम्,
गतिर्स्त्वं गतिर्स्त्वं त्वमेका भवानी ।।

न मैं दान जानूं नहीं ध्यान जानूं, नहीं जानता तन्त्र मन्त्रादि माता।
न मैं न्यास जानूं न पूजन तुम्हारा। मेरी गति तुम्ही एक हो बस भवानी।।

न जानामि पुण्यं न जानामि तीर्थं,
न जानामि मुक्तिं लयम्बा कदाचित् ।
न जानामि भक्तिं व्रतं वापि मार्त-,
गतिर्स्त्वं गतिर्स्त्वं त्वमेका भवानी ।।

नहीं जानता पुण्य क्या तीर्थ क्या है, नहीं जानता मोक्ष क्या और लय क्या।
नहीं जानता भक्ति को और व्रतों को, मेरी गति मेरी गति तुम्ही हो भवानी।।

कुकर्मी कुसङ्गी कुबुद्धिः कुदासः,
कुलाचारहीनः कदाचारलीनः ।
कुदृष्टि-कुवाक्य-प्रबन्धः सदाऽहं,
गतिर्स्त्वं गतिर्स्त्वं त्वमेका भवानी ।।

कुकर्मी कुसंगी बुरी बुद्धिवाला, सदाचार से हूँ रहित नीच पापी।
बुरी दृष्टि देखा बुरे वाक्य बोले, मेरी गति मेरी गति तुम्हीं हो भवानी।।

प्रजेशं रमेशं महेशं सुरेशं,
दिनेशं निशीथेश्वरं वा कदाचित् ।
न जानामि चान्यत् सदाऽहंशरण्यं,
गतिर्स्त्वं गतिर्स्त्वं त्वमेका भवानी ।।

प्रजापति रमापति उमापति शचीपति, दिवापति निशापति न जानूँ किसी को।
शरण देने वाली मैं चरणों में पड़ा हूँ, मेरी गति मेरी गति तुम्हीं एक भवानी।।

विवादे विषादे प्रमादे प्रवासे,
जले चानले पर्वते शत्रुमध्ये ।
अरण्ये शरण्ये सदा मां प्रपाहि,
गतिर्स्त्वं गतिर्स्त्वं त्वमेका भवानी ।।

विवादों विषादों प्रमादादिकों में, वनों में पहाड़ों में अग्नि जलों में।
सदा ही करो रक्षा करुणामयि माँ, मेरी गति तुम्हीं हो तुम्हीं हो भवानी।।

अनाथो दरिद्रो जरारोगयुक्तो,
महाक्षीणदीनः सदा जाड्यवक्त्रः ।

विपत्तौ प्रविष्टः प्रणष्टः सदाऽहं,
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानी ॥

अनाथ दरिद्री जरा जीर्ण रोगी, विपदग्रस्त अत्यंत दुर्बल सदा से।
कहाँ जाऊँ माँ बस तुम्हारा सहारा, मेरी गति मेरी गति तुम्हीं हो भवानी॥

●

शिवनामावल्यष्टकम्

हे चन्द्रचूड़ मदनांतक शूलपाणे, स्थाणो गिरीश गिरजेश महेश शम्भो।
भूतेश भीतिमधुसूदन मामनाथं, संसारदुखगहनाज्जगदीश रक्ष॥१॥
हे पार्वतीहृदयवल्लभ चन्द्रमौले, भूताधि व प्रमथनाथ गिरीशजाप।
हे वामदेव भव रुद्र पिनाकपाणे, संसारदुःखगहनाज्जगदीश रक्ष॥२॥
हे नीलकंठ वृषमध्वज पञ्चवक्त्र, लोकेश शेषवलय प्रमथेश शर्व।
हे धूर्जटे पशुपते गिरिजापते मां, संसारदुःखगहनाज्जगदीश रक्ष॥३॥
हे विश्वनाथ शंकर देवदेव, गंगाधर प्रमथनायक नन्दिकेश।
वाणेश्वरान्धकरिपो हर लोकनाथ, संसारदुःखगहनाज्जगदीश रक्ष॥४॥
वाराणसीपुरपते मणिकर्णिकेश, वीरेश दक्षमखकाल विभो गणेश।
सर्वज्ञ सर्वहृदयैकनिवास नाथ, संसारदुःखगहनाज्जगदीश रक्ष॥५॥
श्री मन्महेश्वर कृपामय हे दयालो, हे व्योमकेश शितिकण्ठ गणाधिनाथ।
भस्मांगराग नृकपालकलापमाल, संसारदुःखगहन्नाजगदीश रक्ष ॥६॥
कैलाशशैलविनिवास वृषाकपे हे मृत्युंजय त्रिनयन त्रिजगन्निवास।
नारायणप्रिय मदापह शक्तिनाथ, संसारदुःखगहनाज्जगदीश रक्ष॥७॥
विश्वेश विश्वभवनाशित विश्वन्प विश्वात्मक त्रिभुवनैकगुणाभिवेश।

हे विश्ववन्द्य करुणामय दीनबन्धो, संसारदुःखगहनाज्जगदीश रक्ष॥८॥

गौरीविलासभुवनाय महेश्वराय, पंचाननाय शरणागतकल्पकाय।
शर्वाय सर्वजगतामधिपाय तस्मै दारिद्रदुःखदहनाय नमः शिवाय॥९॥

इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितं शिवनामावल्यष्टकं सम्पूर्णम्।

●

॥ अभिलाषाष्टकम् ॥

जय शिव शंकर जय गंगाधर करुणा कर करतार हरे।
जय कैलाशी जय अविनाशी सुख राशि सुख सार हरे॥
जय शशिशेखर जय डमरूधर जय जय प्रेमागार हरे।
जय त्रिपुरारी जय मदहारी नित्य अनन्त अपार हरे॥
निर्गुण जय-जय सगुण अनामय निराकार साकार हरे।
पारवती पति हर हर शम्भो पाहि पाहि दातार हरे॥१॥

जय रामेश्वर जय नागेश्वर वैद्यनाथ केदार हरे।
मल्लिक अर्जुन सोमनाथ जय महाकाल ओंकार हरे॥
त्र्यम्बक ईश्वर जय घृष्णेश्वर भीमेश्वर जगतार हरे।
काशीपति श्री विश्वनाथ जय मंगलमय अधहार हरे॥
नीलकंठ जय भूतनाथ जय मृत्युंजय अविकार हरे।
पारवती पति हर हर शम्भो पाहि पाहि दातार हरे॥२॥

जय महेश जय-जय भवेश जय आदि देव भुवनेश विभो।
किस मुख से हे गुणातीत प्रभो तब अपार गुण वर्णन हो॥
जय भव कारक धारक हारक पातक दारक शिव शम्भो।

दीनन दुख हर सर्व सुखाकर प्रेम सुधाकर की जय हो।।
पार लगा दो भव सागर से बनकर करुणाधार हरे।
पारवती पति हर हर शम्भो पाहि पाहि दातार हरे।।३।।

जय मनभावन जय अतिं पावन शोक नशावन शिव शम्भो।
विपद विदारण अधम अधारण सत्य सनातन शिव शम्भो।।
वाहन वृषभ नाग भूषण वर धवल भस्मतन शिव शम्भो।
मदन कदन कर पाप हरण हर चरण मनन धन शिवशम्भो।।
बिवसन विश्व रूप प्रलयंकर जग के मूलाधार हरे।
पारवती पति हर हर शम्भो पाहि पाहि दातार हरे।।४।।

भोलानाथ कृपालु दयामय अवढर दानी शिवयोगी।
निमिष मात्र में देते हैं नवनिधि मनमानी शिवयोगी।।
सरल हृदय अति करुणा सागर अकथ कहानी शिवयोगी।
भक्तों पर सर्वस्व लुटाकर बने मसानी शिवयोगी।।
स्वयं अकिंचन जन मन रंजन पर शिव परम उदार हरे।
पारवती पति हर हर शम्भो पाहि पाहि दातार हरे।।५।।

आशुतोष इस मोहमयी निन्द्रा से मुझे जगा देना।
विषम वेदना से विषयों की मायाधीश छुड़ा देना।।
रूप सुधा की एक बूँद से जीवन मुक्त बना देना।
दिव्य ज्ञान भण्डार युगल चरणों की लगन लगा देना।।
एक बार इस मन मन्दिर में कीजे पद संचार हरे।
पारवती पति हर हर शम्भो पाहि पाहि दातार हरे।।६।।

दानी हो दो भिक्षा में अपनी अनपायनि भक्ति विभो।
शक्तिमान हो दो अविचल निष्काम प्रेम की भक्ति विभो।।
त्यागी हो दो इस असार संसार पूर्ण वैराग्य प्रभो।
परम पिता हो दो तुम अपने चरणों में अनुराग प्रभो।।
स्वामी हो निज सेवक की सुन लेना करुण पुकार हरे।
पारवती पति हर हर शम्भो पाहि पाहि दातार हरे।।७।।

तुम बिन व्याकुल हूँ प्राणेश्वर आ जाओ भगवन्त हरे।
चरण शरण की बाँह गहो हे उमा रमण प्रियकान्त हरे।।
विरह व्यथित हूँ दीन दुखी हूँ दीन दयालु अनन्त हरे।
आओ तुम मेरे हो जाओ आ जाओ श्रीमन्त हरे।।
मेरी इस दयनीय दशा पर कुछ तो करो विचार हरे।
पारवती पति हर हर शम्भो पाहि पाहि दातार हरे।।८।।

●

भोला तेरे नाम अनेक धाम अनेक

कोई भी प्राणी यदि भगवान् के पवित्र नामों व धामों का उच्चारण करे तो उसे निश्चय ही सद्गति प्राप्त होती है, इसमें कोई संशय नहीं।

जय महेश जय-जय सुरेश जय नीलकण्ठ जय शिव शम्भो ।
जय शशिशेखर जय डमरुधर, जय गिरिजापति मदन विभो ।।
जय पञ्चानन जय सच्चिदानन्द, जय अभयंकर शिव शंकर ।
जय त्रिपुरारी भव भय हारी, रूप तुम्हारा अति सुन्दर ।।
जय गंगाधर जय डमरुधर, तीन लोकपति तुम ईश्वर ।
मृत्युंजय हर हर दिव्य मङ्गलकर, भूतनाथ जय जयदीश्वर ।।

जय अखिलेश्वर जय भूतेश्वर, ओंकारेश्वर रामेश्वर।
जय धृष्णेश्वर त्र्यम्बकईश्वर, विश्वनाथ जय विश्वेश्वर॥
जय विमलेश्वर चन्द्रमौलीश्वर, सोमनाथ जय देवेश्वर।
जय अमरेश्वर जय सिद्धेश्वर, अलखनाथ जय धोपेश्वर॥
जय नकुलेश्वर जय तारकेश्वर, मल्लिकार्जुन कुबेरेश्वर।
जय दक्षेश्वर जय सम्मिदेश्वर, अमरनाथ आदित्येश्वर॥
जय जागेश्वर जय बागेश्वर, भीमाशंकर हायेश्वर।
जय गुप्तेश्वर जय मुक्तेश्वर, वनखन्डी जय दर्शनेश्वर॥
राजराजेश्वर पिप्पलेश्वर, पशुपतिनाथ गोकर्णेश्वर।
जय बटकेश्वर जय रङ्गेश्वर, बैजनाथ महाकालेश्वर॥
जय नागेश्वर जय घुश्मेश्वर, केदारनाथ जय अमलेश्वर।
महाबलेश्वर जय भुवनेश्वर, जय मीनाक्षी सुन्दरेश्वर॥
शंकर के नाम के धाम के जिन मुख निकसें नाम।
ऐसे भक्त को 'ओम' शिव, देंगे अपना धाम॥

●

भगवान् श्री शिव का ध्यान

श्री महेश की अङ्गकान्ति अति सुन्दर चम्पक - वर्ण - समान।
श्री मुख एक, त्रिलोचन शोभित, मुख पर खेल रही मुस्कान॥
रत्न-स्वर्ण-आभूषण भूषति शोभित गले मालती हार।
मुकुट मनोहर सद्रत्नों का करता उज्जवलता विस्तार॥
कुम्बकण्ठ में, वक्षःस्थल पर रहे आभरण विविधि विराज।
जो अपनी उज्जवल आभा से बढ़ा रहे आनन्द - समाज॥
घुटनों तक लम्बी अति सुन्दर शोभन शिव की भुजा विशाल।

सुन्दर वलय मनोहर अंगद आदिक से शोभित सब काल ।।
अग्नितप्त, अतिशुद्ध, सूक्ष्म अति, अनुपम, अति विचित्र मनहर ।
वस्त्र और उपवस्त्र सुशोभित शुचि, अमूल्य श्री शिव - तन पर ।।
चन्दन-अगरु चारु कुंकुम - कस्तूरी - भूषित अंग सकल ।
दर्पण रत्न-सुमण्डित कर में, आँखें कजरारी उज्जवल ।।
अपनी दिव्य प्रभा से सबका आच्छादित कर रहे प्रकाश ।
अति सुमनोहर रुप, तरुण अति सुन्दर वय का किये विकास ।।
सभी विभूषित अङ्गों से भूषित भव नित्य परम रमणीय ।
सती-शिरोमणि गिरिवर- नन्दिनी के प्रियतम सुकांत कमनीय ।।
सदा शान्त अव्यग्र मुखाम्बुज कोटि शशिधरों से सुन्दर ।
सर्व अंग सुन्दर तन की छवि कोटि मनोजों से बढ़कर ।।
इस प्रकार एकान्त चित्त से जो करते श्री शिव का ध्यान ।
उनको निजस्वरूप दे देते 'ओम' आशुतोष भगवान् ।।

●

भक्त नज़ीर की भावना

कर स्नान ध्यान रख दिल में मन्दिर शिव का जा खोला ।
धूप, दीप, नैवेद्य चढ़ाकर पानी में कुमकुम घोला ।।
प्रेम से स्तुति पाठ पढ़ाया शीश झुकाया अनमोला ।
हाथ जोड़ दंडवत करी और वाणी शिव से यूँ बोला ।।
दुःख दारिद्रय दूर हों मेरे बाबा ऋद्धि सिद्धि से भर झोला ।
घंटा हिलाकर गाल बजाया बम् बम् बम् श्री बम् भोला ।।१।।
अर्द्धांगे नित गौर विराजे संग नादिया रहता है ।
दिन और रात जटा से जिनकी गंगाजल जो बहता है ।।

भक्तिदान वरदान वो पावे शिव की शरण जो गहता है ।
शिव की भक्ति सदा सुखदायक ये जो मुख से कहता है ॥
दुःख दारिद्रय दूर हों मेरे बाबा ऋद्धि सिद्धि से भर झोला ।
घंटा हिलाकर गाल बजाया बम् बम् बम् श्री बम् भोला ॥२॥

भोलानाथ नाम शिवशंकर आशुतोष कहलाते हैं ।
जो जन शिव से माँगें जाकर खाली कभी न आते हैं ॥
धन सन्तान राज और विद्या सब विभूति से पाते हैं ।
इसीलिए तो सुर नर मुनि सब शिव से ध्यान लगाते हैं ॥
दुःख दारिद्रय दूर हों मेरे बाबा ऋद्धि सिद्धि से भर झोला ।
घंटा हिलाकर गाल बजाया बम् बम् बम् श्री बम् भोला ॥३॥

कहीं पे निर्गुण निराकार और कहीं देह पुजवाया है ।
नीलकण्ठ कहीं पंचमुखी हो दर्शन आप दिखाया है ॥
जिस जिसने शिव भक्ति करी है मनवांछित फल पाया है ।
यही जान शिवजी से हमने अपना ध्यान लगाया है ॥
दुःख दारिद्रय दूर हों मेरे बाबा ऋद्धि सिद्धि से भर झोला ।
घंटा हिलाकर गाल बजाया बम् बम् बम् श्री बम् भोला ॥४॥

महिमा श्री सर्वेश्वर शिव की वेद पुराण बखानी है ।
तीन लोक चौदह भुवन में शिव समान को दानी है ।
इसीलिए सब सोंच समझकर हमने में ठानी है ।
पढ़-पढ़ यही नज़ीर सुनाये प्रेम भक्ति से बानी है ॥
दुःख दारिद्रय दूर हों मेरे बाबा ऋद्धि सिद्धि से भर झोला ।
घंटा हिलाकर गाल बजाया बम् बम् बम् श्री बम् भोला ॥५॥

भजन

सदा शिव सर्व वरदाता दिगम्बर हो तो ऐसा हो।
हरे सब दुःख भक्तन के दयाकर हो तो ऐसा हो॥

शिखर कैलाश के ऊपर कल्पतरूओं की छाया में।
रमे नित संग गिरजा के रमणधर हो तो ऐसा हो॥

शीश पर गंग की धारा, सुहावे भाल में लोचन।
कला मस्तक में चन्दन की, मनोहर हो तो ऐसा हो॥

भयंकर जहर जब निकला क्षीर सागर के मथने से।
धरा सब कंठ में पीकर जो विषधर हो तो ऐसा हो॥

सिरों को काटकर अपने किया जब होम रावण ने।
दिया सब राज्य दुनिया के दिलावर हो तो ऐसा हो॥

किया नन्दी ने जा वन में कठिन तप काल के डर से।
बनाया खास गण अपना अमरकर हो तो ऐसा हो॥

बनाये बीच सागर में तीन पुर दैत्य सेना ने।
उड़ाये एक ही शर में त्रिपुर हर हो तो ऐसा हो॥

पिता के यज्ञ में जाकर तजी जब देह गिरिजा ने।
किया सब ध्वंस पलभर में भयंकर हो तो ऐसा हो॥

देवता दैत्यगण सारे जपें नित नाम शंकर का।
वो ब्रह्मानन्द दुनिया में उजागर हो तो ऐसा हो॥

●

कजली

सावन आये भोला भाये मनवां शिव - शिव करे पुकार।
इधर - उधर क्यों भटकत है तू उन्हीं को निहार।
यह दुनिया है आनी - जानी झूठा सब संसार।
जन्म - जन्म में भटका है तू चेतो अबकी बार।
इस असार संसार में केवल शिव का नाम ही सार।
'ओम' कहें गिरिजाशंकर ही करेंगे बेड़ा पार।

✤ ✤ ✤

आए सावन मास सुहावन, सब कोई शिव पूजो मन लाय।
गंगाजल केसरिया चन्दन, पुष्प सुगन्ध चढ़ाय।
भांति-भांति के भोग लगाओ, सुमन हार पहिराय।
पूजन कर पुनि करो आरती, सब क्लेश नसि जाय।
'देवीसहाय' आप गुरु मोंको दीन्ही राह बताय।

✤ ✤ ✤

हे शंकर करुणानिधान प्रभु लीजै खबर हमारी रे।
भवसागर से पार करो मैं आयो शरण तिहारी रे।
यह कलिकाल बिहाल किये जेहि धरम दिये सब टारी रे।
नीच करत आचार बहुत द्विज होन लगे व्यभिचारी रे।
याहू पर अनरीति करत कलि ने माया विस्तारी रे।
जती करत बैपार बहुत धन हीन कुलीन दुखारी रे।
'देवीसहाय' जपो शिव-शिव ह्वै हैं मुद मंगलकारी रे।
मैं तो प्रभु की गोद भयो शिव पितु गिरिजा महतारी रे।

जब भी अवसर मिले आपको सीताराम कहा करिये।
सुबह-शाम हो या दोपहर हो आठों याम कहा करिये ॥
ज़ब भी........

राधा-माधव, राधा-वल्लभ, राधेश्याम कहा करिये।
'श्री कृष्ण' गोविन्द नाम का अमृत पान किया करिये ॥
जब भी........

निद्रादेवी की गोदी में, सीताराम कहा करिये।
रोग-शोक में, प्रसन्नता में, राधेश्याम कहा करिये ॥
जब भी........

उमा भवानी, पति कैलाशी, भोलेनाथ कहा करिये।
मारुतिनन्दन, भक्त शिरोमणि, जय हनुमान कहा करिये ॥
जब भी........

दशरथ सुत, कौशल्या नन्दन सीताराम कहा करिये।
जीवन भर श्रद्धा भक्ति से, राधेश्याम कहा करिये ॥

●

विनय

सुनो अब विनती शिवशंकर हमारी आज बारी है।
तुम्हारे हाथ गंगाधर प्रभु लज्जा हमारी है ॥

अभय को देने वाले हो कहाते हो तुम अभयंकर।
शान्ति-कल्याण के दाता क्यों सुधि तुमने बिसारी है ॥

तुम्हारा ही सहारा है, तुम्हारा ही भरोसा है।
अकेला छोड़ दोगे तो, हँसी इसमें तुम्हारी है ॥

जल्दी रीझते हो तुम, कहाते अवढरदानी हो।
हमारी याद अपने दिल से, क्यों तुमने निकारी है॥

मेरे मरने से पहिले तुम, मुझे अपना लो शिवशंकर।
यूँ ही मर जायेगा यदि 'ओम', बदनामी तुम्हारी है॥

✤ ✤ ✤

है विधाता की दूकान दुनियाँ, हर तरह माल मिलता यहीं है।
कर्म के भाव होता है सौदा, कम अधिक भाव मिलता नहीं है॥

आप चाहें अगर लाभ जीवन, भक्ति की नाव में बैठ जायें।
हो गये पार लाखों सुना है, एक भी भक्त डूबा नहीं है॥

हर घड़ी का जमा-खर्च होगा, चित्रकेतु न सब लिखा लिया है।
वह विधाता सदा जागता है, एक पल को भी सोता नहीं है॥

रुप, रस, गन्ध करुणा सुधादि, ईर्ष्या छल कपट भी गरल भी।
कौन सी वस्तु लोगे बताओ, कौन सी वस्तु लेना नहीं है॥

है परोपकार अनमोल सौदा, जिन्दगी की तराजू में तोलो।
रात - दिन जिसके पलड़े हैं दो - दो
इसमें आजकल क्या 'श्रीकृष्ण' सोंचो जिन्दगी का भरोसा नहीं है॥

✤ ✤ ✤

मुदित मन हो महेश्वर को मना ले जिसका जी चाहें।
स्वगति बिगड़ी हुई पल में बना ले जिसका जी चाहें॥

सिवा सुमिरन सदा शिव के नहीं कुछ सार दुनिया में।
समझ व सोंचकर दिल में जमा ले जिसका जी चाहे॥

अमित अघराशि-वृन्दों को जुरे जो जन्म-जन्मों में।
सुकृत ले नाम शंकर का नसा ले जिसका जी चाहे ॥

नहीं कुछ काम आने का करता जिसका जतन निशिदिन।
वृथा सुत वित्त में चित्त को फंसा ले जिसका जी चाहे ॥

विषय की वासनाओं से नहीं सुख-शान्ति मिलने की।
तृषा मृगतृष्ण के जल से बुझा ले जिसका जी चाहे ॥

लोक आनन्द वो सुख कर प्रगट परलोक को हितकर।
सुभग सत्संग में मति को सजा ले जिसका जी चांहे ॥

हमारे भोले बाबा को मना ले जिसका जी चाहे।
चरण में शीश शशिशेखर नवा ले जिसका जी चाहे ॥

❖ ❖ ❖

हम सब प्रेम से शिवजी तुम्हें मस्तक नवाते हैं।
विश्व कल्याण हेतु आपका गुणगान गाते हैं ॥

तुम्हारे वाम अंग गिरिजा गोद गणपति सुहाते हैं।
सर्प और मुण्ड की माला आपकी शोभा बढ़ाते हैं ॥

भाल पर चन्द्रमा सोहे जटा में गंग की धारा।
बेलपत्री चढ़ा कर के आपको हम रिझाते हैं ॥

सनातन धर्म की जय हो सुबुद्धि सबको दो स्वामी।
पुष्पमाला गले पहिनो विजया का भोग लगाते हैं ॥

हो सब प्राणियों में प्रीति यह विनती हमारी है।
तुम्हें अपना बनाने को थाल दीपक सजाते हैं ॥

उमापति 'ओम' को भक्ति दो करे गुणगान नित तेरा।
लाज रखना उन भक्तों की जो तेरी शरण में आते हैं ।।

❖ ❖ ❖

शिव-शिव-शिव-शिव नाम जपे जा, तेरा करेंगे बेड़ा पार भोले भन्डारी।
भक्ति रस का पान किये जा तेरा भर देंगे भन्डार बाबा त्रिपुरारी।।

बड़े - बड़े पापी को भोले तूने गले लगाया
विषय वासना से निकालकर अपने लोक पठाया
हमको भी अपना लो बाबा, सुन लो करुण पुकार हमारी
तेरा करेंगे..........

डिम-डिम-डिम-डिम डमरु बाजे मन पावन हो जावे
शिव-पूजन की मस्ती में जो खोवे सब कुछ पावे
आशुतोष तुम अवढरदानी, रख लो अब तो लाज हमारी
तेरा करेंगे..........

शिव-आराधन मण्डल ने है अब यह अलख जगाई
घर-घर सब शिवजी को पूजें, बढ़े प्रीति अधिकाई
अब तो 'ओम' को दरस दिखा दो, अब तो अपना लो त्रिपुरारी
तेरा करेंगे..........

●

शिव स्तुति

ॐ शिव ॐ शिव परात्परा शिव
ॐ कारा शिव तव शरणम्
ॐ शिव.....
हे शिव शंकर भवानी शंकर
नमामी शंकर भवानी शंकर
उमा महेश्वर तव शरणम, उमा महेश्वर तव शरणम्
ॐ कारा तव शिव शरणम्
ॐ शिव.....
हे वृषध्वज हे धर्मध्वज साम्ब सदा शिव तव शरणम् २
ॐ शिव.....
हे जगदीश पिनाक महेश्वर २ त्रिनयन शंकर तव शरणम् २
ॐ शिव.....
हे शशि शेखर शम्भु शिवाप्रिय २ शिव गंगाधर तव शरणम् २
ॐ शिव.....
हे शूलपाणि सोम शिवा प्रिय २ शिव शिव अपि तव शरणम् २
ॐ शिव.....
हे मृत्युजँय पशुपति शंकर ४ भुजंग भूषण तव शरणम् २
ॐ शिव.....
कैलाशवासी रुद्रगिरीश २ पार्वतीपति ॐ हर शरणम् २
ॐ शिव.....

●

कजली

शिव बैठे हैं ध्यान लगाये बुदियां पड़ने लगीं
बाबा बैठे हैं ध्यान.....

बुदियां बरसे बिजरी चमके, (२) पवन झकोरा खाये
बुदियां पड़ने लगी.....

सिकुड़ी सिमटी गौरा भीगें, (२) विनय करे सिरनाय
बुदियां..... बाबा बैठ.....

जागो विश्वनाथ पिया मोरे, (२) हम तो भीगे जायं (२)
बुदियां पड़ने.....

नयन खोल मुस्काये दिये शिव, (२) मृगछाला लीन उठाय (२)
बुदियां पड़ने लगीं.....

प्रेम मगन दौड़े आये भोला, (२) राम राम मन ही मन कीन्हा
गौरा को लीन उठाय, बुदियां पड़ने लगी (२)
भोलो बाबा है ध्यान.....

शत सृष्टि तांडव रचियता, नटराज राज नमोनमः
हे आद्य गुरु शंकर पिता, (२) नटराज राज नमोनमः
शत सृष्टि.....

गम्भीर नाद मृंदगना, भव के परे बह्मडंना (२)
नित होत नाद प्रंचडना, (२) नटराज राज नमोनमः
शत सृष्टि....

सिर ज्ञान गंगा चंन्द्रमा, (२) इद बह्म ज्योति ललाटमा (२)
विषनाग माला कंठमा, (२) नटराज राज नमोनमः (२)
शत सृष्टि.....

तव शक्ति वामडगें पिता, (२) है चन्र्दिका अपराजिता (२)
चहुँ वेद गायें संघिता, (२) नटराज राज नमोनमः (२)
शत सृष्टि.....

●

गंगा शिव के सीस पर चन्द्र विराजे भाल।
ऐसी सुन्दर छवि पर कोटि जन्म बलिहार।
गौरी बायें हैं सदा गोद में गनपत लाल।
कृपादृष्टि हम पर करौ हे कालहु के काल।
भस्मी रमी है अंग में गले नाग लहराये।
रामनाम में लीन तुम मेरे मन में रहो बसाये।
ब्रह्मा विष्णु शेषजी करते जिनका ध्यान।
प्रेम भाव पर रीझते श्री शंकर भगवान्।
मेरी सब बाधा हरौ हे गौरी के नाथ।
नयन से नयन मिलाय के अब तो करो निहाल।
नयना मोरे लालची तेरे नयना रहे लुभाय।
कृपादृष्टि करना प्रभो मेरा जन्म सुफल हो जाये।

...र्ी, बिजनौर
...र भेंट–
...काश आर्य
...काश आर्य

धर्म अभिरक्षा में सदैव अग्रणी
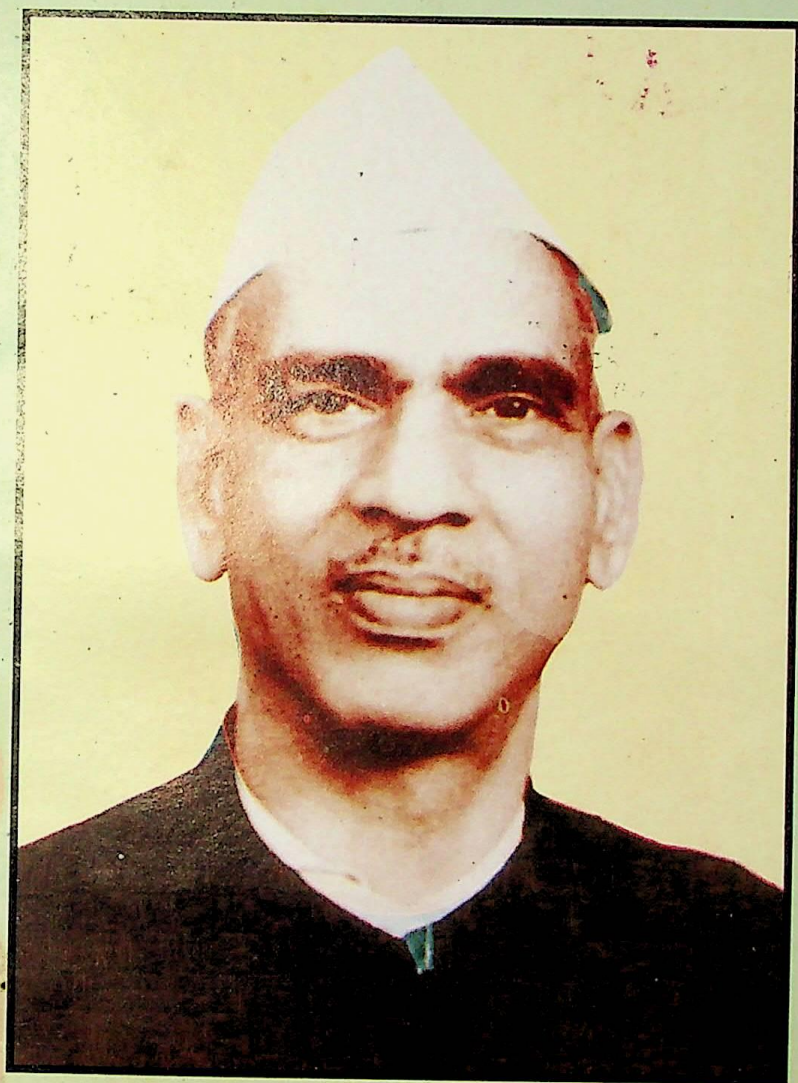
लाला रामकुमार अग्रवाला सर्राफ

प्रयाण २३-५-१९८८

की पुण्य स्मृति में इस पुस्तक के प्रकाशन में
उनके परिजनों द्वारा सम्पूर्ण व्यय वहन किया गया।

राजेन्द्रकुमार अग्रवाल, विष्णुकुमार अग्रवाल,
श्यामकुमार अग्रवाल एवं समस्त परिवार

सनातन धर्म के आधार स्तम्भ
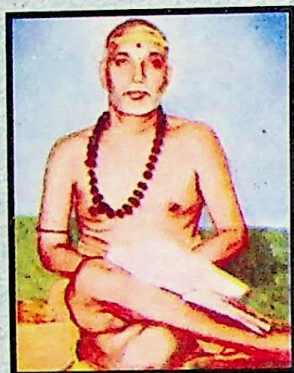
ब्रह्मलीन धर्मसम्राट
स्वामी श्री करपात्री जी महाराज

ब्रह्मलीन जगदगुरुशंकराचार्य
ज्योतिष्पीठाधीश्वर
अनंत श्री स्वामी श्रीकृष्णबोधाश्रम जी महाराज

कलियुग के आचार्य
शंकरावतार

भगवान् आद्य शंकराचार्य

अनंत श्री विभूषित द्वारका शारदा
पीठाधीश्वर जगद्‌गुरुशंकराचार्य
स्वामी श्री स्वरूपानन्द जी महाराज
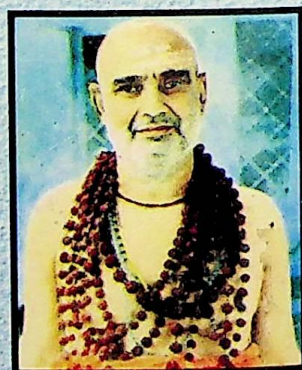
ब्रह्मलीन
श्रीमज्जगद्‌गुरुशंकराचार्य गोवर्धनपीठाधीश्वर
श्री स्वामी निरंजन देवतीर्थ जी महाराज (पुरी)

श्री शिवाराधन मण्डल का १५वाँ पुष्प शीघ्र प्रकाशित होगा।